कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः17, अंकः 9—11 जून से अगस्त 2018

इस अंक में......

16वां साहित्य मेलाः एक खबर

साहित्य समाज का पथ प्रदर्शक हैः डॉ० यज्ञ दत्त शर्मा.............13—16

प्रयोगवादी रचनाकारः आलोचना..........10—12

-डॉ० मो० मजीद मिया

सर्वधर्म सम्भाव में विश्वधर्म का उदय

–डॉ० आनन्द प्रसाद सिंह..07—09

स्थायी स्तम्भ

संपादक के नाम पाती, प्रेरक प्रसंग 4,5

अपनी बातः सरकारी स्कूलों की ओर 06

परिचर्चाः

क्या बलात्कार की घटनाओं के लिए पाश्चात्य संस्कृति जिम्मेदार है? ....17—19

हिन्दीतर भाषी रचनाकार-

ऊँ नमः शिवाय-विजय कुमार सम्पत्त 20—21

कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ० पूनम माटिया, रमेश राज, रेखा दुग्गल 22

रीता राम दास की कविताएं....... 23

कहानीः अब मेरी बारी है-कविता विकास, कबाड़-चेतना भाटी.... 24—25,

साहित्य समाचार, स्वास्थ्य, 26, 33

धारावाहिक उपन्यासः निर्भया-अंकिता साहू, 27—28

लघु कथाएंः बलिराम महतो, सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', डॉ. पी.आर. वासुदेवन, आशा रौतेला मेहरा, सपना मिश्रा 29—32

समीक्षा 34

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

आदरणीय, संपादक महोदय जी

सादर-अभिवादन

विश्व स्नेह समाज का मई २०१८ का अंक प्राप्त हुआ. डॉ० किश्वर सुल्ताना का लेख 'भारत में विश्व बन्धुत्व की भावना' में लेखिका महोदया ने ठीक ही लिखा है 'यहां के ऋषि मुनियो ने कहा है कि यह समस्त धरा और इस पर बसने वाले सभी मनुष्य एक जैसे ही है. इसलिये सभी आपस में बंधु है. बहुत की सराहनीय और उत्कृष्ट लेख है. दूसरा आलेख डॉ० विदुषी शर्मा जी का है 'सोशल मीडिया और एक अदृश्य परिपक्व बंधन' जो वर्तमान में एक बहस का मुद्‌दा बनता जा रहा है. एक तरफ सोशल मीडिया से तमाम विसंगतिया देखने को मिल रही है. कहीं तलाक की नौबत आ रही है, तो कहीं अहैतुक घटनाएं घटित हो रही है. फिर भी अगर हम सोशल मीडिया का प्रयोग एक सीमित दायरे में, अच्छी मानसिकता के साथ करे तो वास्तव में फायदे मंद है. कोई भी नया आविष्कार उसके प्रयोग करने वाले की सोच, दशा और दिशा पर निर्भर करता है. लेखिका ने उसके सकरात्मक पहलू को उठाया है. वास्तव में हमारी सोच सकारात्मक ही होनी चाहिए.

अनिल विद्यालंकर का लेख 'बुद्धिमान व्यक्ति जीवन भर अध्ययन करता है' बहुत उपयोगी और सारगर्भित है. जबकि इसकी उपयोगिता को सोशल मीडिया ने काफी कम कर दिया है. लेकिन हमें सोशल मीडिया की सक्रियता के साथ-साथ पठन-पाठन यानि मुद्रित सामग्री के अध्ययन के शौक को बरकरार रखना होगा. आज कल स्कूलों में बच्चों को रट्टू बनाने की परम्परा सी चल निकली है. विषय वस्तु की जानकारी बच्चे नहीं रखते है, बस रट कर पास हो जाते है, उसके गूढ़ तथ्यों को नहीं समझते है, क्योंकि वे पढ़ने के प्रति रुचि नहीं रखते है. पहले एक ही विषय के लिए कई किताबें पढ़ी जाती थी, उसमें छात्र डूबकर पढ़ते थे और शिक्षक उसमें डूबकर पढ़ाते थे. लेकिन अब न तो वैसे शिक्षक रहे और ना छात्र. शिक्षक अपना कोरम पूरा करते है और छात्र अपना कागज रुपी डिग्री एकत्र करने. यह हमारे देश व समाज के लिए उचित नहीं है. इन सबके अतिरिक्त व्यंग्य 'वाकई! कुछ सवालों के जवाब नहीं होते.... तारकेश कुमार ओझा, मिलना तुम दोनों घर पे अच्छे लगे. लेकिन इसी अंक का एक लघु व्यंग्य बहुत हुआ अत्याचार आज की राजनीति को बड़े ही तरीके से दिखाया है. इस तरह धोने की हिम्मत वर्तमान परिवेश बहुत कम लेखक व पत्रकार रखते है. लेखक को बहुत-बहुत बधाई. चेतना भाटी जी की कहानी 'कबाड़', स्नेह ठाकुर जी की कविता 'यह कलम' कहानी कविता विकास की 'अब मेरी बारी है' आदि अच्दे लगे. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह ३६ पृष्ठीय पत्रिका गागर में सागर है. संपादक महोदय को इसके लिए बध ाई. जिनके कुशल संपादकत्व में निरन्तर यह कार्य जारी है. आज के इस अर्थयुग में किसी साहित्यिक सामाजिक पत्रिका को १८ वर्ष तक ढो लेना, मतलब निकालना बहुत ही साहसिक कदम है, क्योंकि ऐसी पत्रिकाओं को विज्ञापन के नाम पर झुनझुना ही मिलते है. संपादक/प्रकाशक को अपनी जेब से पैसे लगाकर निकालना होता है, उस पर से सामग्री को एकत्र करना. पूरे संपादकीय परिवार को कोटिशः बधाई।

-एम.पी. द्विवेदी

सोनभद्र, उ.प्र.

संपादक के नाम पाती

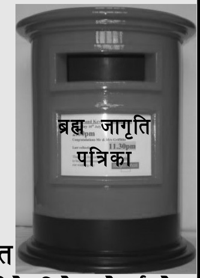

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

सम्मानित पाठकों अपनी प्रतिक्रियाओं, शिकायतों, सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका को निखारने, उपयोगी बनाने में हमें मिल सके. धन्यवाद।

संपादक

प्रेरक प्रसंग

कोकिल! सम्मोहन है वाणी में, मोहन की मुरली सा, फिर भी गोकुल के गांवो को रिझाना अभी बाकी है. एक नहीं पल्लव रसाल को रिझाने में क्या भला है? अभी तुझे जग में मधुर गति राग से मनुज को अनुराग से बदलना है.

कोकिल, तुझे बोलते बोलते युग बीत गए, गांव मिट गए, नगर उजड़ गए, किन्तु मृग तृष्णा की प्यास नहीं मिट सकी. छोड़ यह राग, कुछ गीत नए गीत, जिसे सुन मानव को मीत मिल सकें. बोले तेरे मीठे है, करुणा से भीगे हैं, किन्तु इस मानव के भाग्य क्यों रुठे हैं.

कोकिला अमवां की डाली पर बसन्ती, बहार पर ही कूकती हो क्यों? कीकर की डाल पर, झुलसी बयार पर कूक कूक चल! रुप-मद-वैभव के महलों में भला कहां. ..? दुखितों, निराश्रितों की कुटिया में पगली! ममता और प्यार है.

बगुला! तू अपनी उदर पूर्ति के लिए साधुता का कैसा ढोंग रचा रहा है? तू ही क्या? मानव भी इस हेतु असंख्य ढोंग रचाता है. इस संसार में इस पेट के लिए एक से एक बढ़कर अपराध होते हैं.

आदाब अर्ज़ है

• ि• जिस चीज में आपकी लगन है उसे करने का कोई टाईम फिक्स नहीं होता, चाहे रात को १ ही क्यों न बजे हो.

• अगर आप चाहते हैं कि कोई चीज अच्छे से हो तो उसे खुद कीजिये.

• जितने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं.

• जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी.

• यदि लोग आपके लक्ष्य पर हंस नहीं रहे है तो समझो आपका लक्ष्य बहुत छोटा हैं.

• सबकुछ कुछ नहीं से शुरू हुआ था.

• हुनर तो सबमें होता है फर्क बस इतना होता है कि किसी का छिप जाता है तो किसी का छप जाता है.

📖 दाउजी

अगले अंक की परिचर्चा

क्या २०१४ के बाद भ्रष्टाचार में कमी आई है? अपने विचार पक्ष-विपक्ष में अधिकतम 500 शब्दों में 15 अगस्त 2018 तक भेजे।

अपनी बात

सरकारी स्कूलों की ओर

अभी कुछ दिनों पहले किसी समाचार पत्र में एक समाचार पढ़ने को मिला कि केरल में अचानक सरकारी स्कूलो में दो लाख प्रवेश हो गये. गांव के गांव वालो ने निर्णय ले लिया कि उनके बच्चे अब निजी स्कूलों में नहीं बल्कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ेगे. निजी विद्यालयों से चौथी तक के बच्चो ने एक मुश्त सरकारी विद्यालयों में बदली करा ली. सरकारी विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चे किसी मजबूरीवश नहीं, बल्कि बेहतरी के लिए सरकारी विद्यालयों में आए है. इस खबर को पढ़कर एकबारगी विश्वास ही नहीं हो रहा था कि हमारे देश यानि भारत में ऐसा हुआ है. यह खबर किसी सपने से कम नहीं लगी. क्योंकि अपने देश में अधिकांश बच्चे पढ़ने नहीं बल्कि दोपहर के भोजन के लिए जाते है, शेष वे बच्चे होते है जिनके मां-बाप इस स्थिति में नहीं होते कि किसी निजी स्कूल की फीस भर सके. उनमें भी अधिकांश लड़किया होती है जो साक्षर बनने के नाम पर जाती है क्योंकि उनके अभिभावक लड़कियों को दोयम दर्जे में शामिल मानकर चलते है. और माने भी क्यों न. अधिकांश सरकारी विद्यालयों में एक-दो अध्यापक है, कक्षाएं सामान्यतः ५ से ८. रोज दोपहर को खाना बनवाना, पोलियो, जनसंख्या, चुनाव ड्यूटी, मतदाता सूची बनवाना, संशोधन ना जाने कौन-कौन से काम सरकारी विद्यालयों के अध्यापको से लिये जाते है, अध्यापन छोड़कर. ऊपर से अनपढ़-गंवार प्रधानों की चमचागिरी अलग से. अधिकांश अध्यापक तो ऐसे है जिन्हें कुछ आता ही नहीं, बस जैसे तैसे तिकड़म से सरकारी नौकरी मिल गयी. बस आते है और पुरुष मोबाइल पर, गप्पबाजी में, महिलाएं अपने गप्पबाजी और स्वेटर बूनने में समय पास करना होता है. अगर प्रधानजी खुश है तो इनको स्कूल में केवल हाजिरी लगाने की जरुरत है. ऐसे में हम कैसे उम्मीद करे कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई जाएगी. सरकारी स्कूलो के अधिकांश अध्यापको से अगर क से ज्ञ, ए से जेड, २ से २० तक पहाड़ा जो बहुत ही सामान्य जरुरत है प्राईमरी शिक्षा के लिए, पूछा जाय तो मुंह छिपाए नजर आऐंगे.

जब हमारे देश के आने वाले कल के भविष्य को संवारने वाले निर्माता ही ऐसे है तो वो क्या पढ़ाएगे. ऊपर से आजकल अभिभावको में अंग्रेजी माध्यम का भूत सवार है वो अलग से. एक रिक्शे वाला, मजदूर भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ाना चाहता है. वह चाहता है कि उसका बच्चा भी टीपीर टीपीर अंग्रेजी बोले. चाहे इसके लिए उसे दो रोटी कम ही क्यों न खानी पड़े. वह इस आस में लगा रहता है कि उसका बच्चा अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालय में पढ़कर डाक्टर, इंजीनियर आदि बन जाएगा, उसके दुःख के दिन व्यतीत हो जाएगे. इसी उम्मीद में उसके खुद के दिन ही गूजर जाते है.

अगर सरकारी विद्यालयों के अध्यापको को केवल शिक्षक बना दिया जाए, उनके लिए प्रति अध्यापक छात्रों की संख्या, उनके परिणाम के लिए मानक तय कर दिये जाए, योग्य अध्यापकों को चयन हो, तो निश्चित ही सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालयों की तुलना में बेहतर शिक्षा देने में सक्षम साबित हो सकते है. इससे अभिभावक निजी विद्यालयों की लूट से बच जाएगे और बेहतर शिक्षा मिलेगी. निजी स्कूलों के अध्यापकों की गुणवत्ता भी आज के सरकारी अध्यापको से किसी भी मामले में बेहतर नहीं आंकी जा सकती है. वहां तो अभिभावक व शिक्षक दोनों का शोषण होता है.

सरकार को चाहिए कि कम से कम केरल सरकार से सीख लेकर सरकारी विद्यालयों की दशा-दिशा को सुधारे ताकि हमारे बच्चे निजी विद्यालयों में नहीं बल्कि सरकारी विद्यालयों में प्रवेश के लिए लालायित रहे. सरकारी विद्यालयों में कम से कम एक बात तो है कि शिक्षक को अपने जीविकोपार्जन के लिए अलग से कुछ सोचना नहीं है, बस उन्हें कर्त्तव्यनिष्ठ बनाने के लिए प्रेरित करना.

केरल सरकार को इस क्रांतिकारी कार्य के लिए कोटिशः बधाई.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सर्वधर्म सम्भाव में विश्वधर्म का उदय

■ मनुष्य इस विशाल विश्व का केन्द्र बिन्दु और सृष्टि का सिरमौर है. ऐसी स्थिति में मनुष्य का यह दायित्व है कि वह चाहे किसी भी देश समाज और राष्ट्र का हो वह निश्चित रूप से वहाँ की सांस्कृतिक चेतना और धार्मिक भावना को विकसित होने में योगदान दे और अपने से इतर का सामादर भी करें।

-डॉ० आनन्द प्रसाद सिंह
टी.एन.बी कॉलेज, भागलपुर, बिहार

ढ़ाई वर्णों के मेल से निर्मित यह शब्द 'धर्म' बड़ा ही गूढ़ अर्थ रखता है. 'ध' से तात्पर्य धारण से है और 'म' का तात्पर्य खुद के अंतःकरण मर्म से। अर्थात 'धारयति इति धर्मः' जो मर्म से धारण किया जाय वह धर्म है. किसी के द्वारा स्व के लिए जिन नियमों, विधियों, तरीकों रास्तों को अख्तियार या धारण किया जाता है वही उसका धर्म कहा जाता है. धारण करने वाला एक व्यक्ति, एक समाज या समुदाय हो सकता है, राष्ट्र अथवा देश हो सकता है. पूरी मानवता या सम्पूर्ण विश्व भी हो सकता है और उसकी कुछ बातें कॉमन भी हो सकती है. मगर मिला जुलाकर अंदर में एक अंतसूत्र है जो मानवता का पाठ पढ़ाते है.

धर्म को धारण किया जाता है कल्याण के लिये. कल्याण के माध्यम से शांति के लिये संतुष्टि के लिए, आनन्द के लिये. आनन्द मानव जीवन का चरम लक्ष्य है. भौतिक आनन्द से होते हुए ब्रह्म आनंद को प्राप्त कर लेना जीवन का अभीष्ट है. आनंद का आधार प्रेम है, प्रेम ही धर्म का प्राण है और नैतिकता धर्म का प्रथम सोपान. धर्म का अस्तित्व उन सभी परिस्थितियों में विद्यमान रहता है. जिनमें शाश्वत और सौदर्य की खोज होती है जिसकी भाव धारा व्यष्टि से समष्टि की और समष्टि से व्यष्टि की ओर बहती है. मन वचन और कर्म के द्वारा आत्मा के संदेश को महत्वपूर्ण मानकर परम प्रकाश की खोज मानव धर्म की आधारशिला मानी गई है. तभी तो जीव पुकार उठता है.

'तमसों मा ज्योतिगर्मय'

अंधकार से प्रकाश की ओर अभिगमन के लिये जीव को सुनाम (सुकर्म) करना पड़ता है. ईश्वर इस पृथ्वी पर जीव को जन्म देते है, कर्म करने के लिये मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत कर्म करता रहता है. कर्म करना उसका आशुभाव है कर्म सुकर्म दोनो हो सकता है. पर कर्म के ही आधार पर उसका ज्ञानवर्द्धन होता है, संस्कार का परिष्करण होता चला जाता है. उसका आचार बदलने लगता है, उसकी मनोदशा उसी ओर इंगित करने लगती है. वह अपने लक्ष्य की ओर पहुँचने लगता है. यही कारण है कि कर्म के अनुरूप फल की प्राप्ति के प्रावधान को भारतीय वांड़मय ने स्वीकारा है.

''जो जस करहि तासु फल चाखा''

वियावन वन में बैठा साधक व्यक्ति साधना में आकाश की ओर निहारता, अन्तमुर्खी होकर उसमें भरे गूढ़ रहस्यों को ढूढता है. प्रयोगशाला में बैठा वैज्ञानिक ध्यानस्थ होकर सावधानी से तत्व का निरीक्षण परीक्षण करता है. एक अज्ञान से तो दूसरा ज्ञान से, परमात्मा की इस सृष्टि से गूढ़ रहस्य की जानकारी प्राप्त कर आश्चर्य चकित होता है. एक का रास्ता अध्यात्म का है तो दूसरे का रास्ता विज्ञान का. एक अंतर्मुखी है तो दूसरा वर्हिमुखी स्थिति ओर अवस्था में अन्तर होते हुए भी दोनों ही धर्ममय स्थिति है. एक अध्यात्म से खोजी है दूसरा विज्ञान से व्यस्त. सुकर्मशील है, जहाँ उदान्त जीवन की निष्ठा, शाश्वत की खोज और निष्कलुष आनंद की सृष्टि होती है. वहाँ धर्म मुर्त्तिमान होता है.

तभी तो कपिलवस्तु के राजकुमार किशोर गौतम की आत्मा एक रोगी, वृद्ध मृतक को देखकर तड़प उठी, उस प्रकाश, उस ज्ञान और उस आनंद को प्राप्त करने के लिए जो इस संसारिक दुखो से निजात दिला सके. राजसी सुख और भौतिक भोग को त्याग कर गौतम मध्य रात्रि में निकल पड़े उस ज्ञान की खोज में जो मानव जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बतला सके. कठिन साधना असीम धैर्य और अखण्ड विश्वास के सहारे बिहार के बोधि वृक्ष की शांत पिठिका पर जिन्हें उस अमूल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसने भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्रबुद्ध शुद्ध जीवन जीने का संदेश दिया, गौतम से वे बुद्ध हो गये.

विवेक अध्यात्म का बीज है. अध्यात्मशील व्यक्ति स्व में सर्व और सर्व में स्व का दर्शन करता है. वेद वेदान्त विसारद स्वामी विवेकानन्द ने सर्वधर्म सम्मेलन सिकागो के मंच से सर्वधर्म समभाव का संदेश दुनिया को दिया था. तत्वदर्शी विवेकानन्द के विचार में-धर्म अलग-अलग रास्तें है, जिनका लक्ष्य एक ईश्वर तक पहुँचना है. मानव धर्म सर्वोपरि कहा जा सकता है, जो सीधा सादा निर्मल, सार्वजनीन और प्राकृतिक होता है. यह दो आत्मा की वास्तविकता का प्रतिपादन करता है, जो देश काल और सभी संकीर्णताओ से ऊपर है.

लोक धरातल पर ईश्वर के रहस्यमय अहसास को ढूढने वाले महानता के मशाल संत कबीर अहिंसा के प्रतिपादक जैन तीर्थकर महावीर का दीन दुखियों के कल्याणक संत साई बाबा, ज्ञानी संत स्वामी शांतानन्द, राष्ट्रभक्त योग गुरू स्वामी रोमदेव, रामद्रष्टा सत्याग्रही मात्मा गाँधी, संत शिरोमणि स्वामी मेंहीदास जी, गुरूनानक, प्रभु ईशु मसीह, पैगम्बर मुहम्मद, शक्ति भक्त रामकृष्ण परमहंस, कृष्णभक्त सूरदास, राम भक्त तुलसीदास, प्रेम दिवानी मीराबाई, कृष्ण भावर्मुत चैतन्य महाप्रभु आदि संतों महात्माओं में शाश्वत आध्यात्मिक दीप्ति और धर्म की विशिष्टता के दर्शन होते हैं, जिन्होने मानवीय चेतना को जगाकर धर्म की अलख ज्योति जलाई है. जिसके प्रकाश में सृष्टि रचेता की पहचान का संकेत मिल गया.

मनुष्य इस विशाल विश्व का केन्द्र बिन्दु और सृष्टि का सिरमौर है. जीवो में सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण चेतन है इसकी कल्याण सिद्वि के लिए ही धर्म का उदय होता है, संस्कृति की चेतना जागती है और सभ्यता का पल्लवन होता है. ऐसी स्थिति में मनुष्य का यह दायित्व और कर्त्तव्य भी है कि वह चाहे किसी भी देश समाज और राष्ट्र का हो वह निश्चित रूप से वहाँ की सांस्कृतिक चेतना और धार्मिक भावना को विकसित होने में योगदान दे और अपने से इतर का सामादर भी करे. अन्य धर्मों की चेतना में उसी एकमात्र अनंत सत्ता की छवि का दर्शन करे. सभी धर्मो में समभाव रखते हुए उनकी प्राकृतिक और नैगर्सिक विशेषताओं को स्वीकार और अंगीकार करे.

प्राचीनता और नैसर्गिकता के दृष्टिकोण से सनातन धर्म ही विश्व पटल पर सर्वप्रथम उदित हुआ, यों तो भारत भूमि का कण-कण धर्म के रस से सिंचिंत रहा है. यहाँ की हवा में अध्यात्म की खुशबू और विवेक की विशिष्ट वयार बहती है. यहाँ भोग से अधिक योग और धन से अधिक धर्म को महत्व दिया जाता है. यहाँ परोपकार धर्म की नींव है. संतुलन और सामंजस्य धर्म की मूल चेतना मानी गई है. सनातन धर्म की सारगर्भिता विश्व धर्म के सन्निकट होने का अहसास कराती है. यह हर दृष्टि से यथार्थ मालूम पड़ता है. इसकी यह आशु विशेषता है.

जिस धर्म में उपयुक्त गुणों का अभाव हो, वह धर्म नहीं, पंथ या मत हो सकता है. पंथ तो पथ या रास्ता है और मत काट-छाँटकर बनाया गया विचार-सार होता है. अनेक पंथों और मतों की मंजिल एक हो सकती है और उद्देश्य भी एक हो सकता है पर मतों में मतान्तर और पंथों में भ्रम भी हो सकता है. कई धर्मो में प्रकारांतर हो सकता है परन्तु अंतिम और उच्चतम लक्ष्य सबका एक ही है. सबका मंजिल एक, सबका मालिक एक. एक ईश्वर सर्वसृष्टा और एक जननी भूमि. सभी मानव उन्हीं की संतान, सभी में आपसी मातृभाव का आशु पल्लवन. भारतीय चिंतन में आदिकाल से यही बोध रहा है कि पृथ्वी हमारे लिये भूमि का मात्र एक टुकड़ा न होकर एक जीती जागती जीवंत माँ है जिसकी गोद में सारे प्राणी जन्म लेते और विकसित होते है यह हमारी रक्षा सुरक्षा ठीक उसी प्रकार करती है. जिसे कि एक माँ वात्सल्य की भावना से अभिपूरित होकर अपने नवजात शिशु की करती है. इसी संवेदना से अभिभूत होकर वेदों के रचेता ऋषि उदघोष करते रहे हैः-

''माता पृथ्वीः पुत्रोडहं पृलिव्याः।।

पृथ्वी और प्रकृति के साथ जब तक इंसान की ऐसी सामुज्य भावना बहती रही तब तक मनुष्य संतुलन की बात सोचते रहे परन्तु पृथ्वी का दोहन और प्रकृति के साथ छेड़छाड़ औद्योगिकरण के आने से प्रारंभ हो गया. पाश्चात्य सभ्यता ने भौतिक स्वार्थपरता को हवा दे दी, जिससे धार्मिक असहनशीलता बढ़ने लगी. यह हुआ कि विद्वेष भाव से धार्मिक संकोचन और कट्टरता, सम्प्रति पृथ्वी तल पर संतुलन दिनोदिन बद से बदतर होता चला जा रहा है. मानव जीवन पर संकट के बादल गहराते जा रहे है. इसके लिए मानव ही तो जबावदेह है.

अस्तु उपर्युक्त समस्या के समाधान के लिए सर्वप्रथम मानव का वैचारिक संतुलन आवश्यक है. फिर राष्ट्रों को भी अपना शौर्य-गौरव को सीमांकन में रखते हुए आपस में मिल बैठकर उपाय तलाशना होगा. इको-सिस्टम को समझते हुए मानव को अपनी सोच बदलनी होगी. यह समझना होगा कि वायुमंडल और वातावरण के संतुलन को बनाये रखने में मात्र जीवित प्राणी ही नहीं अपितु मनुष्य पौधे, एल्गी बैक्टिरीया आदि के साथ-साथ पहाड़ चट्टान, वृक्ष, बर्फ, समुद्र एवं ज्वालामुखी भी अपनी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाते हैं. तभी प्रकृतिक में संतुलन की मात्रा अब तक कुछ बरकरार थी.

संतो के विचार से विज्ञान अध्यात्म सम्मत हो और अध्यात्म वैज्ञानिक. वर्तमान में विज्ञान अध्यात्म से दूर चला जा रहा है. फलतः दुनिया पर बरबादी का खतरा बढ़ता चला जा रहा है. अध्यात्म विज्ञान की आँखे कही जा सकती है और विज्ञान अध्यात्म की भुजाएँ. दोनों का परस्पर आपस में सहयोग आवश्यक है.

अध्यात्म सबसे बड़ा संरक्षक है और माता पृथ्वी सर्वाधिक सहनशीला है. जल में उफान आ सकता है और वायु में तूफान, अग्नि दावानल का रूप ले सकती है और आकाश चक्रवातों को जन्म दे सकता है परन्तु अध्यात्म और धरती एक माता पिता की तरह सभी कष्टों को सहन करते हुए मानवों की सुरक्षा करते है. अध्यात्म का फल है धर्म और पृथ्वी की पूर्ति है साधन. साधन का एक जरिया राजनीति हो सकता है.

संतुलन के लिए धर्म और राजनीति दोनो की आवश्यकता है. धर्म के बिना राजनीति बिन ब्रेक की गाड़ी है तो राजनीति के अभाव में धर्म लंगड़ा. अस्तु दोनो का सहयोग एक दूसरे को आवश्यक है. साथ ही दोनो में आपसी संतुलन भी अपेक्षित है. किन्तु दुर्भाग्य है कि वर्तमान राजनीति से धर्म को अलग रख गया है. फिर भी लोग राम राज्य की कामना करते है तो बाइबिल और कुरान का सहारा भी राजनीतिज्ञ लोग की न कही से ढूँढ लाते है. धर्म और राजनीति का यह असंतुलन ही वर्तमान में राज संकट का कारण है.

ऋषियों, मनीषियों और विचारकों के विचार से सारी समस्याओं का समाधान संतुलन में है. संत कबीर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, योग गुरू बाबा रामदेव के विचारों को साथ लेकर अध्यात्म और विज्ञान, धर्म और राजनीति जल और सौर पर्यावरण के संतुलन को तलाशना चाहिये. समानता संरक्षण और समादर के भाव का पल्लवन कर एक वैश्विक विधान एवं धार्मिक आधान का निर्माण करना चाहिये तथा भविष्यागत अत्यावश्यक संभावनाओं का हृदय से स्वागत करना चाहिये. जबकि आवश्यक है कि एक विश्व, एक भाषा, एक धर्म एक संस्कृति का आधार बने. जाति, लिंग, वर्ग और धन के आधार पर बरती जाने वाली विषमता का अंत हो. यह उपक्रम विचारशील व्यक्तियों और राष्ट्रध्याक्षों द्वारा पराक्रम पूर्वक किया जाना चाहिए तभी राष्ट्र और विश्व का कल्याण संभव है. यही निर्मल एवं स्वच्छ विश्वधर्म होगा, जिसकी शांत शीतल छाया में मानवता संत चित आनन्द को प्राप्त कर सकेगी.

''विश्व मानव धर्मः सर्वोपरिः''

काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2018

इस प्रतियोगिता में किसी भी उम्र का कोई भी हिन्दी भाषी प्रतिभागी बन सकता है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी। अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को ही काव्य सम्राट की उपाधि व नगद ११०००/रुपये प्रदान किए जाएंगे। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जाएगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2018

विस्तृत जानकारी के लिए ईमेल/व्हाटसएप करें:

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

६५ए/२, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने,

मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, सं0: 9335155949, 9264964112

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विशेषः कृपया मोबाइल पर संपर्क ना करें।

प्रयोगवादी रचनाकारः आलोचना

विज्ञान के द्वारा मनुष्य को दिया गया नया परिवर्तनशील दृष्टिकोण ही प्रयोग है. जैसे विज्ञान में प्रयोग एवं तर्क द्वारा पदार्थ का विश्लेषण किया जाता है वैसे ही प्रयोगवादी रचनाकार मानव के मानसिक विचार एवं उसके स्थितियों का विश्लेषण करता रहता है.

-डॉ० मो० मजीद मिया

प्रयोग एवं वाद के योग से प्रयोगवाद शब्द का निर्माण हुआ है. प्रयोग शब्द का पहला अर्थ होता है, किसी भी वस्तु या विषय को व्यवहार में लाने का कार्य या उपयोग एवं दूसरा अर्थ नीति, नियम, सिद्धान्त आदि की स्थापना करके उसे कार्य रूप में लाने की प्रक्रिया. जिन रीतिबद्ध समालोचकों ने प्रयोगवादी रचनाओं के बारे में अपने राय व्यक्त किए हैं, वैसे प्रयोगवादी परस्त समालोचकों को अपने आलोचना में ज्यादा-ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है.
प्रयोग शब्द किसी भी चले आ रहे पुराने परंपरा, सिद्धान्त या मान्यताओं में नए प्रयोग करने अथवा स्थापित सिद्धान्त या वस्तुओं को व्यवहार में लाने का भी अर्थ समझाता है. प्रयोगवाद शब्द-'पहले से चले आ रहे कलात्मक या साहित्यिक परम्पराओं को प्रयोगात्मक रूप से परीक्षण करके उसमें स्थित अनावश्यक तथा निरर्थक मान्यताओं का विरोध करते हुए या वैसे मान्यताओं को त्यागते हुए नए अर्थ युक्त मान्यताओं को लागू करता है.' इस प्रकार प्रयोग शब्द का अर्थ वस्तु या विषय को व्यवहार में लाकर परीक्षण करना है. इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो श्री गणपतिचन्द्र गुप्त के पाँव आरम्भ में लड़खड़ा गए थे पर बाद में ठीक प्रकार से चलने लगे थे. प्रयोगवादी कथाकारों के बारे में गार्डन चार्ल्स लिखते है- 'जैनेन्द्र पहले कथाकार है, जिन्होंने लोगों का ध्यान प्रेमचन्द्र से हटाकर अपनी ओर आकृष्ट किया. जैनेन्द्र, प्रेमचन्द्र के बाद ही प्रमुख हिन्दी कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए है और साथ ही युवा कहानीकार भी आरंभ से कथावस्तु, भावना और भाषा के विषय में उनकी अगुआई स्वीकार करते रहे है. प्रयोगवादी शब्द हमेशा प्रयोगवाद संबंधी, प्रयोगवाद के अनुयायी, प्रयोगवादी शैली शब्दगत विश्लेषण-सिद्धान्त, व्यवहार परीक्षण एवं विचार धारा के प्रतिपादन करने के अर्थ का बोध करता है. इस प्रकार साहित्य के संदर्भ में परंपरागत मान्यताओं को त्याग कर साहित्य में नए-नवेले रूप, संरचना एवं भाषिक विन्यास ही साहित्यिक प्रयोग है.

विज्ञान के द्वारा मनुष्य को दिया गया नया परिवर्तनशील दृष्टिकोण ही प्रयोग है. अगर देखा जाए तो विज्ञान के युग में बौद्धिक विश्लेषण के बिना किसी भी प्रकार के सत्य को हम स्थापित नहीं कर सकते हैं. जिस प्रकार विज्ञान में प्रयोग एवं तर्क द्वारा पदार्थ का विश्लेषण किया जाता है उसी प्रकार प्रयोगवादी रचनाकार मानव के मानसिक विचार एवं उसके स्थितियों का विश्लेषण करता रहता है. साधारणतः रचनाकार एक वैज्ञानिक के हैसियत से जीवन के स्थिति एवं प्रतिक्रियाओं की मीमांसा करते हुए कलात्मक दृष्टि से उनको अभिव्यक्त करते हैं तदनुरूप नवीन शब्द योजना, शैली या शिल्प का आविष्कार होता है और इसी में प्रयोगवाद की सार्थकता होती है. अज्ञेय और जैनेन्द्र को एक ही श्रेणी में रखते हुए आलोचक वार्ष्णेय का कथन है-दोनों भूल गए हैं कि उनके 'जीवन में भी सत्य और संदेश' की जरूरत है, दोनों ही अपने कहानी में संशय, निराशा और यौन कुंठा को लेकर चलते हुए नयी कविता को भी वे इसी श्रेणी में रखते हैं.

कतिपय विद्वानों ने भी चर्चा किया है कि प्रयोगवाद असल में कोई वाद नहीं, क्योंकि नए-नए शिल्प का प्रयोग करने वाले विषयों में सभी वाद का पूर्णतः या आंशिक रूप में झुकाव होता ही है.

उत्तरोत्तर युग में सृजित होने वाले साहित्य में नवीन बिम्ब-प्रतीक, शिल्प का प्रयोग एवं अभिव्यक्ति के नए माध्यमों का प्रयोग होते रहा है, फिर भी प्रयोगवाद द्वारा साहित्य के रचना में प्रयोगशीलता को अत्यधिक महत्व देने के कारण इसे प्रयोगवाद कहना उचित ठहरता है. खास करके पूर्व एवं पश्चिम दोनों तरफ के काव्य साधकों में प्रयोगात्मक प्रवृति के प्रति झुकाव पहले से देखा जा सकता है. प्रयोगशीलता के दृष्टि से पूर्व से पश्चिम ज्यादा धनवान है फिर भी साहित्यिक वाद के रूप में काव्य संबंधी एक अलग अभियान के रूप में प्रयोगवाद का जन्म भारत में हुआ है. एतिहासिक रूप में प्रयोगवाद का आविर्भाव 1943 को 'तारसप्तक' के प्रकाशन से माना जाता है, जिसके प्रवर्तक 'अज्ञेय' थे। पश्चिम के एज्रा पौण्ड एवं टी. एस. इलियट आदि के कविताओं से अधिकतर हमारे प्रयोगवादी कवि प्रभावित

देखे जा सकते हैं. प्रयोगवादी कविता यथार्थवादी है, उनका मानवतावाद मिथ्या आदर्श के परिकल्पना पर आधारित नहीं है. वह यथार्थ की तीखी चेतना वाले मनुष्य को उसके समग्र परिवेश में समझने-समझाने का वैदिक प्रयत्न करती है. प्रयोगवाद में नया कुछ भी नही होता है और हो भी क्या सकता है, केवल संदर्भ नया होता है जिसमे नया अर्थ बोलने लगता है जिससे विवेक की कसौटी पर खरी उतरने वाली आस्थाएं ही ग्राह्य हो सकती है.

शैली के मिश्रण के संदर्भ से देखने पर उपन्यास में सर्वाधिक मिश्रण सहज एवं सरल स्वभाव में जाता है. उपन्यास के लचकता के कारण जहां कहीं भी इसे घसीटकर या मिला कर किसी भी ढांचा में ढाला जा सकता है।. इसी कारण से गाथा तथा आँखों देखी उत्तराधुनिकता तक के आख्यानों को देखने पर ऐसे प्रयोग की निरंतरता की याद दिलाने के साथ-साथ औपन्यासिक प्रविधि के विकासक्रम को भी दर्शाता है, जो नित्य परिवर्तन होते हुए, विविधता एवं भिन्नता में नाना विधि के आकार प्रकार, स्वरूप ग्रहण करते हुए अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होता है. प्रगतिवाद के समानांतर प्रयोगवाद की धारा भी प्रवाहित होती है जिसका प्रवर्तक अज्ञेय को स्वीकार किया गया है. रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, नेमिचंद जैन, गजानन माधव मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर और भारत भूषण अग्रवाल ये सभी कवि प्रगतिवादी हैं. इन कवियों ने कथ्य और अभिव्यक्ति की दृष्टि से अनेक नए नए प्रयोग किये जिससे तारसप्तक को प्रयोगवाद का आधार ग्रंथ माना गया. अज्ञेय द्वारा संपादित प्रतीक में इन कवियों की अनेक रचनाएं प्रकाशित हुई है. उपन्यास के अपने स्वरूप, संरचना, कथानक, चरित्र एवं पर्यावरण में कुछ नवीनता मिलाकर उत्तरोत्तर नए-नए प्रवृतियों को आगे बढ़ाने को प्रयोग का सामान्य नियम माना जाता है. यही नए रूप, अभिव्यक्ति एवं शिल्प के खोज के कारण आज उपन्यास के क्षेत्र में विस्तार हुआ है एवं क्षेत्र विस्तार ही आगे प्रयोगवाद में आरोपण के कारण होते जा रहे हैं। प्रयोगवदी कवियों को केवल 'प्रयोग' प्रयोग के लिए मात्र न कर कलात्मक उत्कर्ष के लिए करना होगा ऐसा विद्वानों की धारणा है. आज जिन प्रविधि से मनुष्यों(पाठक) को अधिक सम्मोहित किया जा सकता है, वह मान्य सिद्धान्त न होने पर भी पाठक के मन पर शैल्पिक एवं सैद्धान्तिक दोनों दृष्टिकोण से प्रभाव डालता है. आज साहित्य के इतिहासकार की पहली समस्या समसामयिकता के बोध की है और मुझे आशा है कि सिद्धांत रूप से इस बात को सभी जानते और स्वयंसिद्धि के समान मानते भी हैं. कठिनाई सिर्फ इतनी है कि यह केवल जान लेने और मान लेने की बात नहीं है. कौन नही कहता कि हर युग की आवश्यकता के अनुसार इतिहास की बार-बार पुनर्वृ्ष्यवस्थ्था होनी चाहिए, परिवर्तन का सत्य इतना प्रत्यक्ष है कि बड़े से बड़ा शाश्वतवादी भी संसार परिवर्तनशील है कहता पाया जाता है. प्रयोगोन्मुख रचना धर्म भी है अन्यत्र रचना प्रविधि का विकास अथवा नए-नए स्वरूप व नई कविता की व्यक्तिपरक काव्यधारा में भरत जी की अग्रचेत भूमिका रही है. भरत जी का काव्य ऊर्जायुक्त, आत्मविश्वास और काव्य शिल्प की निराली भंगिमा के कारण अपना वैशिष्ट्य रखता है. प्रगतिवादी रचनाकार प्रचलित परिमितता में बंधना न चाहते हुए या उस परिमितता ने नया सोंच व्यक्त न कर पाने पर भी दूसरा रास्ता ढूँढने में वह सफल हो जाता है. पुराने मान्यता या नियमों को स्वीकार कर रचना करना होगा ऐसा जरूरी नहीं है क्योंकि दूसरे पद्धति का अबलम्बन नहीं करना, यह सोंच भी प्रचलित मान्यता के प्रति असमर्थ एवं अस्वीकृति की दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है. वर्तमान में इसी सोंच के परिणति के स्वरूप विपन्नता, अकथनात्मक, अपरिवेशात्मकता, अवैचारिकता, असंस्कृतिकता, अचिंतनता एवं मिथकीयता जैसी मूल्यों के समायोजन से युक्त रचनाएँ रचित होने लगी है.

इसी पक्ष में अभिमुख होकर रचित साहित्य आज की मौलिक पहचान बनी हुई है. ऐसा चिंतन 'अकथात्मक' कथा लेखन एवं 'अउपन्यासत्मक' उपन्यास लेखन के द्वारा आख्यान क्षेत्र में प्रवेश किए हुआ है. ऐसे चिंतन का प्रभाव आख्यानेतर विधा कविता एवं नाटक में भी देखी जा सकती है. प्रयोग का नया-नया संकरण बढ़ते जाने पर पाठकों को पारंपरित रूढ रचना के जैसा वैचित्य प्राप्त नहीं हो सकता एवं वैसी रचना सहज स्वीकार्य भी नहीं हो सकता, फिर भी प्रयोग एवं नवीनता के नाम पर सर्वथा अलग पाठ प्रसस्त कर उपन्यास या अन्य विधा अपने स्वभाव से भी हटता हुआ दृष्टिगोचर होता है. प्रयोगात्मक साहित्य की रचना करते समय यह बौद्धिक एवं सामान्य पाठक के लिए उपर्युक्त है की नहीं, यह ध्यान मे रखना आवश्यक होता है. इसी दृष्टि से प्रयोगात्मक उपन्यास आरंभ में अस्वाभाविक लगने पर भी धीरे-धीरे पाठकों को आदत हो गई है, यह बात भी सत्य है प्रयोगात्मक उपन्यास आगे

चलकर प्रयोगधर्मी रचना होने के कारण प्रयोग केबल मात्र सैद्धान्तिक आग्रह मात्र बनकर रह जाता है, ऐसी स्थिति में लेखक नया प्रयोग कर नाम एवं दाम कमाने के लालच में पर कर रचना करना प्रारम्भ कर देता है. अगर देखा जाए तो प्रयोग साहित्य की बाध्यता भी है, क्योंकि दूसरे साहित्यकारों से पृथक दिखने की लालसा से साहित्यकार नया रास्ता अपनाने के ताक में हमेशा रहता है. प्रयोगवाद के रूप में रूपांतरित होने पर वही बातें सिद्धान्त एवं दर्शन बन जाता है एवं उसमे पयोग का अंश बाँकी नहीं रह जाता है. अतः प्रयोगवाद होकर भी इसकी प्रवृतियाँ प्रयोगशील रहता है.

प्रयोगवाद साहित्यिक रूढ़ि को तोड़कर नए परंपरा का स्थापना करता है. यह वाद प्रगति में आस्था रखने के कारण इसकी गतिशीलता एवं नवीनता इसकी धड़कन होती है. अतः परंपरा से हटकर नवीनता लिए सभी उपन्यास प्रायोगिक उपन्यास होते है. प्रयोग हमेशा सापेक्षता पर आधारित नहीं होता है बल्कि प्रयोग का तात्पर्य 'उपन्यास की परंपरागत मूल्यों को धराशाई करके नए क्षेत्र का अन्वेशन को समझना होता है. विशेषकर उपन्यास लेखन के क्रम में आजकल 'नए उपन्यास', 'अउपन्यास', 'अधिउपन्यास' आदि प्रयोगवादी उपन्यास की रचना करते देखा जाता है.

♦ प्रयोगवाद के इतने लंबे बहस के बाद इसके प्रवृति एवं विशेषताओं को क्रमबद्ध रूप में इस प्रकार देखा जा सकता है.

♦ नए कथ्य, नए पद्धति एवं नए संभावनाओं का खोज करना

♦ रुढ बन चुके नियमों पर प्रश्न खड़ाकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना.

♦ जिज्ञासा को शांत करने के लिए नया प्रयोग कर उसके कलात्मक गुणों का परीक्षण करना.

♦ चमत्कार को महत्व न देकर विवेक के प्रयोग के लिए रचनाकारों को प्रेरित करना.

♦ नवीनता के प्रति आस्थावान रहकर प्रकृति के विकाश में योगदान देना.

♦ प्रयोग अपने में ही पूर्ण न होने के कारण लुप्त एवं नवीन सत्य के साक्षात्कार का प्रयास करना, कथ्य, शैली एवं भाषा का नए प्रयोग एवं प्रणाली से नवीन सौन्दर्य का खोज करना.

♦ अतियथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद से प्रभावित होकर असपष्ट एवं विकृत रूप में यथार्थ का उदघाटन करना.

♦ कल्पना का प्राय अभाव होना

♦ आत्म ग्लानि या लघुताबोध का उदघाटन करते हुए अपने दुर्बलता एवं खिन्नता को बौद्धिक आवरण से ढंकने की कोशिश करना.

♦ कलापक्ष या शिल्प से मुक्त छंद एवं उन्मुक्त नवीन प्रयोग के लिए प्रयास करना.

♦ व्यंग्य एवं वैचित्य का प्रदर्शन करना एवं यौन प्रतीक का आधिक्य होना.

वास्तव में सामाजिक जीवन प्रणाली एवं परंपरागत मान्यता के प्रति शंका एवं असंतोष व्यक्त कर प्रयोगवाद निजी मान्यता एवं प्रयत्नों को विकसित एवं परिमार्जित करने की कोई खास योजना नहीं है. 'प्रयोग' का केबल प्रयोग के लिए उपयोग मात्र करने पर रचना की कलात्मक वैचित्य लुप्त हो जाता है और कठोर प्रयोग का शैल्पिक आग्रह नए उदभावना के मोह के कारण उपन्यास शिथिल हो जाता है एवं अपने स्वभाव को खोने की कगार पर पहुँच जाता है। जिसके कारण स्थापित मूल्य को जड़ से उखाड़ कर नए किसी भी मूल्य एवं मान्यताओं की स्थापना नहीं हो सकती है? प्रयोगवादी साहित्यकार जीवन एवं जगत के प्रति उदासीन होकर काव्य के बहिरंग के पक्ष में यानि शिल्प संधान में अपना ध्यान केन्द्रित करता है. इस वाद में काव्य की उपयोगिता से ज्यादा कथन के चमत्कार को महत्व देता है. अतः प्रयोगवाद जीवन एवं जगत के अनुभूतियों को उतना महत्व न देकर व्यक्ति वैचित्य को ही सर्वस्व मानता है. आज इस परिपाटी के कारण ही साहित्यकार धीरे-धीरे कहीं अंधेरे में विलुप्त होता चला जाता है.

16वां साहित्य मेला धूमधाम से सम्पन्न

साहित्य समाज का पथ प्रदर्शक है: डॉ० यज्ञ दत्त शर्मा

- अस्वस्थ होने के कारण मोबाइल से भी एक प्रतिभागी ने किया काव्य पाठ
- लगभग 15 राज्यों के साहित्यकारों/पत्रकारों ने सहभागिता निभाई
- हमें अपनी भाषा को बचाने और बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए: डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मोहम्मद शेख
- लखनऊ के श्री नरेन्द्र भूषण बने काव्य सम्राट-2018

इलाहाबाद, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की ओर से हिन्दुस्तानी एकेडेमी में 16वां साहित्य मेला धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर दो सत्र में हुए आयोजन में काव्य सम्राट प्रतियोगिता, सम्मान समारोह एवं पुस्तक विमोचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ. कार्यक्रम का शुभारंभ काव्य सम्राट प्रतियोगिता से हुआ, जिसमें अंतिम चरण के लिए चयनित रामकृष्ण विनायक 'सहत्रबुद्धे'-नासिक-महाराष्ट्र, रश्मि राजगृहार-झारखंड, डॉ० रश्मि गंगवानी- दिल्ली, संध्या वर्मा-इलाहाबाद, कु० संगीता सिन्हा-गया-बिहार, नीतू सिंह राय-गाजियाबाद, उ.प्र., डॉ० विदूषी शर्मा-दिल्ली, प्रभासु कुमार-इलाहाबाद, अभिषेक मिश्रा-दिल्ली, श्रीमती सपना मिश्रा-सुल्तानपुर, उ.प्र., नरेन्द्र भूषण-लखनऊ, उ.प्र. प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी रचनाएं पढ़ी.

अंतिम चरण की प्रतियोगिता में लखनऊ के श्री नरेन्द्र भूषण विजयी हुए. आपको काव्य सम्राट-2018 की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा 11000/ रुपये नगद का ईनाम भी दिया गया। अंतिम चरण के निर्णायंक मंडल में डॉ. शभु नाथ त्रिपाठी 'अंशुल', गंगाशरण प्यासा एवं डॉ. माधुरी त्रिपाठी रहीं. सामान्य साहित्यिक अभिरुचि पाठक के रुप में सोनभद्र से मान्यता प्राप्त पत्रकार श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी रहे.

दीप प्रज्ज्वलन करते हुए मुख्य अतिथि

दूसरे सत्र में मुख्य अतिथि शिक्षक विधायक, डॉ० यज्ञ दत्त शर्मा रहे तथा अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने की. इस अवसर पर अतिथियों ने संस्थान द्वारा प्रकाशित देश-विदेश के हिन्दी सेवी संस्थाओं की परिचायिका 'हिन्दी परिचायिका', युवा कवि श्री राजेश कुमार तिवारी के काव्य संग्रह 'गगन के राज' तथा लखनऊ की वंदना श्रीवास्तव के काव्य संग्रह 'एक वेदना' का विमोचन किया.

अपने उद्बोधन में डॉ० यज्ञदत्त शर्मा ने कहा कि साहित्य सामाजिक चेतना विकसित करता है. इसका सम्बंध सभी विधाओं से है. हिन्दी की लोकप्रियता विश्वस्तर पर पर बढ़ रही है. रूसी भाषा में जब रामचरित मानस का अनुवाद हुआ तो 3 दिन में 7 लाख प्रतियां बिक गई. साहित्य समाज को नई राह दिखाता है और संकट में उबारता है. डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने कहा 'अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव से हिन्दी कमजोर हो रही है. अपनी भाषा को बचाने और बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए. युवा पीढ़ी को हिन्दी के बढ़ते प्रभाव और उसके

महत्व को बताना चाहिए. यदि मातृभाषा मजबूत होगी तो समाज, राष्ट्र भी मजबूत होगा. इस अवसर पर पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी भी लगाई गई.

सम्मानित होने वालों में विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की ओर से सुप्रसिद्ध कृषि विशेषज्ञ डॉ० बृजेश कान्त द्विवेदी-इलाहाबाद को कृषकश्री, लोक निर्माण विभाग के कर्मठ अभियंता इजी० अशोक दुबे-इलाहाबाद को अभियांत्रिकीश्री, सुविद्व शिक्षक एवं शिक्षक स्नातक विधायक डॉ० यज्ञदत्त शर्मा-इलाहाबाद को समाज गौरव, श्री गंगा शरण 'प्यासा'- मुरैना, म.प्र. को विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान, डॉ० सिकन्दर लाल-प्रतापगढ़-उ.प्र. को साहित्यश्री सम्मान, सुश्री सैयूयद आयेशा अनिसुदूदीन-अहमदनगर, महाराष्ट्र को राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान, लघुकथा सम्राट-२०१८ के लिए संयुक्त रुप से डॉ. सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'-नई दिल्ली एवं डॉ. पी. आर. वासुदेवन-चेन्नै, तमिलनाडु को लघु कथा प्रतियोगिता में सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने पर लघु कथा सम्राट सम्मान एवं नगद 2500रुपये प्रत्येक थे.

श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास की ओर से श्री सत्यव्रत मिश्र 'गौरव'-इलाहाबाद को समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी समाज सेवी सम्मान, डॉ० मीतू सिन्हा-धनवाद, झारखंड को कलाश्री सम्मान, डॉ० सीमा वर्मा-लखनऊ, उ.प्र. को महादेवी वर्मा सम्मान, श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या', लखनऊ, उ.प्र. को डॉ. किशोरी लाल सम्मान, डॉ० माधुरी त्रिपाठी, रायगढ़, छ.ग. को वर्ष 2017 का समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान, अनुपमा श्रीवास्तव 'अनुश्री', भोपाल, म.प्र. को राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान, कु० रुबि कुशवाहा, इलाहाबाद, उ.प्र. को महिला सशक्तिकरण के लिए निर्भया सम्मान, कु० निधि त्रिपाठी, कु० सन्नो कुशवाहा, कु० दीपाली कुशवाहा, कु० संस्कृति द्विवेदी, कु० पूजा गौतम, कु० शिवानी पाल, कु० अवन्तिका कुशवाहा, इलाहाबाद, उ०प्र० को प्रशस्ति पत्र तथा श्री तरुण कुमार सिंह, लखनऊ, उ.प्र. को डॉ. किशोरी लाल सम्मान देकर सम्मानित किया गया.

मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया की ओर से श्री राकेश कुमार मिश्रा, श्री राजेश कुमार गोस्वामी, प्रभाष सिंह चन्देल, प्रमोद कुमार गुप्ता को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया.

श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास, मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया न्यास एवं द हंगामा यूट्यूब टीवी चैनल के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में

मोबाइल से हुआ काव्य सम्राट प्रतियोगिता का काव्य पाठ

अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम प्रभारी एवं मीडिया फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल ने, स्वागत विदेश सचिव डॉ० रेवा नन्दन द्विवेदी, इलाहाबाद से हिन्दी सांसद गरिमा श्रीवास्तव ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला, संयोजन मिर्जापुर से हिंदी सांसद निगम प्रकाश कश्यप ने किया.

आभार कार्यक्रम संयोजक डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने व्यक्त किया तथा संचालन संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल ने किया. इस अवसर पर डॉ० जया शुक्ला, सत्यप्रकाश, स्वप्निल शर्मा, श्याम किशोर सिंह, डॉ० प्रकाश बहादुर खरे, आलोक चतुर्वेदी, जी.एस.निगम, आशुतोष मिश्र, मुरारी लाल प्रजापति, दीपक वर्मा, सुरेश कुमार, सदाशिव विश्वकर्मा, आलोक चतुर्वेदी, द हंगामा इण्डिया यूट्यूब चैनल की कुमारी रीतिका यादव आदि उपस्थित रहे.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, 1996 से 2018

प्रगति आख्या

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
हम सफर मिलते गये और कारवां बनता गया।

संस्था का गठन 15 जून 1996 को किया गया. उस समय इसका नाम जी.पी.एफ.क्लब इंटरनेशनल था, 06 दिसम्बर 1999 को विधिवत पंजीकृत होकर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान हो गया. 1996 से 2003 तक संस्था ने स्थानीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामान्य ज्ञान, खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा. इन प्रतियोगिताओं से तमाम दबी हुई प्रतिभाओ को आगे बढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ.

स्नेहः 12 मई 1996 को त्रैमासिक 'स्नेह' नाम से एक पत्र/पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जो 09 सितम्बर 2001 को विधिवत भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय में पंजीकष्त होकर मासिक 'विश्व स्नेह समाज' नाम से निर्बाद्ध रुप से प्रकाशित हो रही है। पत्रिका को शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि संगत मान्यता भी प्राप्त है.

स्नेहाश्रमः 15 जनवरी 2004 को देवरिया जिले में स्नेहाश्रम (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) का शिलान्यास किया गया. जिसमें अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, पुस्तकालय, गौशाला सीमित रुप से संचालित हो रहे है. शीघ्र ही इसे हम विस्तार देते हुए इलाहाबाद या इसके आसपास स्थानान्तरित कर विस्तार करने के लिए कृत संकल्पित है. वर्तमान में संस्थान द्वारा 8 पुस्तकालय विभिन्न स्थानों पर संचालित हो रहे है।

साहित्य मेलाः वर्ष 2003 में स्थानीय स्तर पर कुछ समाज सेवियों, पत्रकारों को सम्मानित कर, पुस्तक प्रदर्शनी, परिचर्चा के साथ इसका शुभारम्भ हुआ. 2004 में भी केवल इलाहाबाद के साहित्यकारों, पत्रकारों, समाज सेवियों को ही सम्मानित किया गया. 2005 से इस आयोजन में देश के विभिन्न क्षेत्रों से हिन्दी सेवियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, सम्पादकों, समाज सेवियों से प्रविष्टियां आमंत्रित कर उनमें से निणार्यक मंडल द्वारा चयनित अलग-अलग सम्मानों के लिए किसी एक साहित्यकार, पत्रकार, हिन्दी सेवी को सम्मानित कर इसका विस्तार किया गया. 2005 से यह आयोजन प्रत्येक वर्ष संस्थान द्वारा सामान्यतः फरवरी के दूसरे या तीसरे रविवार को किया जाता है. अभी तक केवल 2007 के मार्च माह में, 2017–18 में जून माह में हुआ है. इस आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से हिन्दी सेवी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं. अब इस आयोजन में परिचर्चा, पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी, बाल काव्य प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, पुस्तकों का लाकोर्पण एवं सारस्वत सम्मान भी शामिल कर लिया गया है. अब तक इस आयोजन में देश के लगभग शताधिक साहित्यकार सम्मानित किए जा चुके हैं. संस्थान के सम्मानों, उपाधियों की अपनी एक गरिमा है. जिसको प्राप्त करने के लिए साहित्यकार लालायित रहते हैं.

देवरिया महोत्सवः वर्ष 2004 में पहली बार इसका आयोजन किया गया जिसमें

प्रगति आख्या का वाचन करती हुई इलाहाबाद से हिन्दी सांसद **सुश्री गरिमा श्रीवास्तव**

लेखक, सामाजिक चिंतक व सांसद मोहन सिंह मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे तथा यह आयोजन वर्ष 2007 तक अनवरत जारी रहा. जिसमें जनपद स्तर के पत्रकारों, साहित्यकारों, समाज सेवियों, शिक्षकों को सम्मानित करने के साथ ही साथ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता रहा.

साहित्य यात्राः इलाहाबाद के बाहर संस्थान द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को साहित्य यात्रा नाम से 2010 में प्रारम्भ किया. प्रथम आयोजन हिन्दी पखवाड़ा में रार्बट्सगंज, सोनभद्र में संस्थान के कार्यसमिति सदस्य श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा किया गया. दूसरा आयोजन हिन्दी सांसद हितेश कुमार शर्मा जी द्वारा बिजनौर, उत्तर प्रदेश में किया गया. तीसरा आयोजन छत्तीसगढ़ से हिन्दी सांसद श्री आर.मुत्थुस्वामी द्वारा किया गया.

साहित्य यात्रा के आयोजन में श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी जी महत्वपूर्ण भूमिका अनवरत अदा कर रहे है. इस तरह से देश के विभिन्न स्थानों पर 20 आयोजन हो चुके है. जिसे संस्था के स्थानीय प्रतिनिधि अपनी देख-रेख में सम्पन्न कराते है.

प्रकाशनः सर्व प्रथम 1997 में संस्था के सचिव (तत्कालीन निदेशक) की कम्प्यूटर की किताब लर्निग कम्प्यूटर विद फन-1, एवं 2 का प्रकाशन किया गया। तदोपरान्त संस्थान द्वारा देश के विभिन्न राज्यों के साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं की लगभग 150 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी है.

काव्य सम्राट/लघुकथा सम्राट प्रतियोगिताः वर्ष 2017 से नगद ईनामी प्रतियोगिता का आयाजेन प्रारम्भ किया गया। जिसमें देश/विदेश के रचनाकारों ने अपनी सहभागिता निभायी।

आगामी योजनाएंः

1— शीघ्र ही गौशाला एवं गौ शोध सस्थान खोलने की योजना है।

2— सम्मानित होने वाले इलाहाबाद के बाहर साहित्यकारों को यात्रा व्यय देने

3-कुछ अन्य स्थानों पर पुस्तकालय/वाचनालय खोलने

4— पुस्तकों का निःशुल्क प्रकाशन

अपीलः संस्थान आप सभी हिन्दी प्रेमियों से यह आग्रह करता है कि संस्था को यथा संभव सहयोग करे व करायें. ताकि हिन्दी सेवा के साथ-साथ समाज सेवा के कार्यो को अंजाम दिया जा सके. आप अपना सहयोग प्रतिदिन या साप्ताहिक एक कप चाय की कटौती करके भी कर सकते है ताकि किसी अनाथ को भोजन, वस्त्र, पुस्तकें दी जा सके। आप अपने किसी परिवार के सदस्यों के नाम पर पुरस्कार, कमरे बनवाकर, अलमारी, फर्नीचर आदि प्रदान कर भी सहयोग कर सकते है. आपका छोटा सा सहयोग किसी की जिंदगी संवार सकता है. विशेष बात यह है कि संस्थान ने अभी तक किसी भी सरकारी योजना या किसी भी प्रकार से ना तो सहयोग लिया है और ना भविष्य में लेने की योजना है. संस्था केवल आमजन की भागीदारी से संस्था की गतिविधियों को अंजाम तक पहुंचाने में लगी हुई है. अगर आप लोग किसी कंपनी के सीएसआर प्रोजेक्ट से सहयोग दिलवा सकते है तो स्वागत है. कुछ विद्वतजनों को यह कहते हुए पाया गया है कि हसरते बड़ी ऊंची ऊंची है.

हसरते पूरी ना हो तो ना सही,
पर ख्वाब देखना कोई गुनाह तो नहीं।

बिना ख्वाब देखे हसरते पूरी करने के बारे में कैसे सोचा जा सकता है. ऐसे लोगों को हम बताना चाहते है हम हसरते देखते ही नहीं, बल्कि उसको पूरा करने का माद्दा भी रखते है. दुष्यंत कुमार की इन पंक्तियों से विराम दूंगी कि

कैसे आकाश में सुराक नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।

धन्यवाद।

लघु कथा प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में देशी-विदेशी कोई भी हिन्दी सेवी सहभागी हो सकता है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी। अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को रुपये ५०००/रुपये प्रदान किए जाएंगे। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जाएगा। कश्पया फोन कर जानकारी ना मांगे, अणुडाक(ई-मेल) या व्हाटसूएप पर आवेदन करें पूरा विवरण नियम एवं शर्तो सहित प्रेषित कर दिया जाएगा। **आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2018**

विस्तृत जानकारी के लिए ईमेल/व्हाटसूएप करेंः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने,

मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, सं0: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com,

hindiseva15@gmail.com, **विशेषः कृपया मोबाइल पर संपर्क ना करें।**

क्या बलात्कार की घटनाओं के लिए पाश्चात्य संस्कृति जिम्मेदार है?

पत्रिका ने परिचर्चा के लिए यह विषय निर्धारित किया था. अधिकांश विचार एक तरह से विपक्ष में ही आये है. पक्ष के जो विचार आये वो सार्थक प्रतीत नहीं हुए या दूसरे शब्दो में यह कहे कि तथ्यहीन और सारगर्भित नहीं थे. हम उन विचारों को ही यहा दे रहे है जो पक्ष या विपक्ष में सार्थक/सारगर्भित लगे. कोई भी संस्कृति गलत नहीं होती है बल्कि भूगोल के हिसाब से उनका अपना महत्व होता है. संस्कृतियां हमें जीवन जीने का लहजा सीखाती है, जो संस्कृति ब्रिटेन के लिए कारगर/बेहतर हो सकती है वह जरुरी नहीं है कि भारत के लिए उतनी कारगर है. ठीक उसी प्रकार भारतीय संस्कृति उनके लिए भी कारगर हो यह जरुरी नहीं है. आपको कौन से विचार अच्छे लगे अपनी राय ई-मेल या व्हाट्सएप नंबर 9335155949 पर अवश्य दे। संपादक मंडल द्वारा चयनित इन विचारों पर पाठको की राय के आधार पर विजेता के नाम की घोषणा अगस्त 2018 के अंक में करेंगे।

-संपादक

पाश्चात्य संस्कृति नहीं, अपितु उसका अंधानुकरण है जिम्मेदार बलात्कार के लिए

-श्रीमती दीप्ति मिश्रा
उपकुलसचिव,
इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

'बलात्कार', छिः यह शब्द ही ऐसा है जिसके सुनने, लिखने, पढ़ने से ही घिन आती है और यही शब्द मीडिया की सुर्खिया बना हुआ है. तमाम दर्द, उत्पीड़न, निर्लज्ज़ता, अवसाद, अपमान और भी न जाने कितने पापों के सम्मिश्रण की उपज है यह वीभत्स शब्द बलात्कार.

प्रकृति की रचना ही स्त्री पुरुष के मिलन से प्रारंभ हुई है, यह मिलन नितांत प्राकृतिक और सहज है किन्तु इसी का अप्राकृतिक, अमानवीय रूप ही बलात्कार है. भारतीय संस्कृति में गृहस्थ आश्रम की शुरुआत वयस्क स्त्री पुरुष के द्वारा होती है. यह सामाजिक सर्वश्रेष्ठ बन्धन है जो नवजीवन के निर्माण, श्रेष्ठ पीढ़ीयों के विकास, सामाजिक सरंचना हेतु निर्मित है.

किन्तु वर्तमान समय में सारा विश्व सभ्यता व संस्कृति से संचालित नहीं हो रहा है अपितु यह बाजारवाद के ज्वर से पीड़ीत है. आज नित नयी यौन उत्प्रेरक दवाइयां, अश्लील साहित्य इत्यादि के विवरण से बाजार पटा पड़ा है. हर तरफ केवल यौन सम्बन्ध, यौन समस्यायें, उनका निदान, विवाहेतर सम्बन्ध, गर्भ निरोधक, नशीली दवाईयां, ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया में इन चीजों में अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं है.

पाश्चात्य देशों यथा यूरोप, कनाडा, अमरीका के कुछ विशिष्ट भाग जहां प्राकृतिक रूप से ठण्ड बहुत अधिक पड़ती है, उन क्षेत्रों के निवासी भीषण ठण्ड में लगातार 8–10 माह काम करते है. उस दौरान धूप की कमी से कई प्रकार के त्वचा रोग होने लगते है जिस कारण ये लोग समुद्र तटों पर सूर्य स्नान करते है, चूंकि ये उन देशों की सामान्य प्रक्रिया है अतः वहां यह सामाजिक रूप से स्वीकार्य है किन्तु भारत जैसे उष्ण देश में यदि कोई इस प्रकार अर्धनग्न अवस्था में सूर्य स्नान करता है तो वह बेशरम, निर्लज्ज या उपभोग हेतु तैयार मान लिया जाता है. फिर आज के समय में बढ़ती जनसंख्या, अत्यन्त तेज महत्वाकाक्षाएं, अत्यधिक तामसिक भोजन, भौतिकवाद, फिल्म एवं फैशन उद्योग का हर शहर, गांव तक प्रसार, प्रचार, कामोतेजक दवाईयां, कम उम्र से शराब, सिगरेट का व्यसन, एकल परिवार, नौकरों पर निर्भरता, इंटरनेट पर सहज-सुलभ पोर्न वीडियो,एवं इत्यादि चीजें हर तरफ बहुतायत से उपलब्ध है जो निश्चित रूप से पाश्चात्य सस्कृति के परिणाम स्वरुप प्राप्त है.

शराब पीने का चलन अब समाज के हर वर्ग में सामान्य सा हो गया है. यहां तक की महिलायें भी बड़ी सरलता से, धड़ल्ले से खुलेआम पाटीयों में, शादीयों में शराब का सेवन करती है और अपने आपको स्वतंत्र बताने में, नारी मुक्ति का अगुवा घोषित करने में गर्व

महसूस करती हैं. पाश्चात्य देशों में शराब पीना मजबूरी है क्योंकि वहां ठण्ड अधिक होती है परन्तु भारत जैसे उष्ण देश में शराब पीना बरबादी की ओर बढ़ना है. शराब पी कर व्यक्ति मानव नहीं दानव हो जाता है और फिर वह अच्छे-बूरे, अपने-पराये, स्त्री-कन्या किसी में भेद नहीं कर पाता और पाप कर बैठता है.

वास्तव में संस्कृति कोई भी बुरी नही है हर सभ्यता-संस्कृति प्राकृतिक वातावरण के आधार पर फलती-फूलती है, किन्तु दूसरे की संस्कृति का अंधानुकरण ही बर्बादी का कारण है. जो चीज एक व्यस्क पुरुष के लिए सही है, वही चीज एक बालक के लिए सही हो, यह आवश्यक नहीं, इसी प्रकार पाश्चात्य संस्कृति, पश्चिमी देशों के लिए उचित हो सकती है, पर भारत के लिए नहीं. पाश्चात्य संस्कषति नहीं, अपितु उसका अंधानुकरण ही दुष्कर्म, बलात्कार जैसे पाप के लिए जिम्मेदार है।

किसी भी देश की संस्कृति बलात्कार की पोषक नहीं हो सकती

भारत का नाम जैसी ही जेहन में आता है-स्वतः ही उसका संबंध संस्कृति और सभ्यता से जुड़ जाता है. लेकिन सभ्यता और संस्कृति के अर्थ को लेकर सबसे ज्यादा उलझन यहीं देखने को मिलता है. संस्कृति 'सं' और 'कृति' से मिलकर बना है जिसका अर्थ क्रमशः उत्तम और चेष्टाएँ. इस प्रकार संस्कृति का सामान्य अर्थ होता है-उन श्रेष्ठ संस्कार, विचार, व्यवहार से है जिससे मानव का कल्याण हो. पाश्चात्य विद्वान जिसबर्ट ने कहा था कि सभ्यता बताती है कि हमारे पास क्या है, जबकि संस्कृति बताती है कि हम क्या हैं.

जब मानव की योग्यता, बुद्धि मानव कल्याण के कार्य करती है तो वह संस्कृति होती लेकिन जब वही योग्यता, बुद्धि और व्यवहार मानव के विनाश का कारण बनती है तो संस्कृति की संज्ञा न देकर 'कुसंस्कृति' कहना उचित होगा क्योंकि संस्कृत चाहे भारतीय हो अथवा पाश्चात्य सबका ध्येय मानव का कल्याण करना होता है, विनाश नहीं। संस्कृति विचारों व व्यवहारों को उन्नत बनाने का कार्य करती है, चोट पहुंचाने का नहीं।

बलात्कार संस्कृति का हिस्सा कतई नहीं हो सकती। भारत में बलात्कार जैसी घटना का जिम्मेदार पाश्चात्य संस्कृति को ठहराना मूर्खता के सिवाय कुछ नहीं है। इस तरह की बातें सिर्फ अपनी कमजोरियों के छिपाने के लिए कही जा सकती है. किसी भी देश की संस्कृति बलात्कार की पोषक नहीं हो सकती है। पाश्चात्य संस्कृति पर अपनी कमजोरी का ठीकरा फोड़ने से पूर्व इस बात की तहकीकात कर लेनी की आवश्यकता है कि क्या जब भारत, पश्चिम के संपर्क में नहीं आया था तो क्या भारत में बलात्कार जैसी घटना नहीं होती थी? औरतों के साथ यौन-हिंसा नहीं होती थी? यदि नहीं तो फिर मिथकों में दुःशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण करना, इंद्र द्वारा अहल्या के साथ अनैतिक संबंध बनाना पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हुआ था? 'देवदासी प्रथा' क्या पाश्चात्य संस्कृति की देन थी?

भारत जैसे पितृसत्तामक समाज में औरत भोग्या के रूप में देखी जाती रही है। देवी का सिर्फ नाम दिया गया, मान नहीं। जिस देश के राजाओं के मध्य युद्ध का एक महत्त्वपूर्ण कारण खूबसूरत स्त्रियों को प्राप्त करने की लालसा भी रही हो, मुझे नहीं लगता कि उस देश के लोग पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण ऐसा करने लगे होंगे। मैं इसे स्वीकार्य नहीं कर सकता। जो पाश्चात्य देश औरतों को वोट और संपत्ति में समान अधिकार की बात करता हो, विधवा पुनर्विवाह और सती प्रथा को अनैतिक घोषित करता हो, उस देश की संस्कृति बलात्कार का पोषक नहीं हो सकती.

मेरे विचारानुसार भारत में बलात्कार की बढ़ती घटना के पीछे पुरुषवादी मानसिकता, फिल्मे, मीडिया और इंटरनेट है. फिल्में राजा हरिश्चन्द्र से शुरु होकर 'लव, सेक्स और धोखा' पर आकर केंद्रित हो गई है. जिन फिल्मों में कामुक दृश्य न होते हैं, वह फिल्में पिट जाती हैं. 'हेट स्टोरी' और 'ग्रैंड मस्ती' जैसी फिल्मों की श्रृंखलाएं बनती जा रही है. जिस देश में पोर्न स्टार का आइटम सान्ग फिल्म की सफलता का गारंटी बनती हो, उस देश पर पाश्चात्य संस्कृति का नहीं बल्कि कुंठित मानसिकता का प्रभाव है। जिओ जैसी सिमकार्ड के द्वारा मुफ्त इंटरनेट तथा सस्ती सुविधाओं का प्रयोग ज्ञान की बजाय पोर्न फिल्मों को देखने में ज्यादा प्रयोग करते हैं। टी.वी पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम मानव-मूल्यों को बढ़ाने के बजाय षड्यंत्रों, खूनी घटनाओं, फैशन आदि कार्यक्रमों को जोर-शोर से दिखाते हैं. मीडिया और सोशल मीडिया बलात्कार जैसी घटनाओं को इस प्रकार प्रसारित करती है मानो यह आम बात हो। उसे राजनीतिक व

धार्मिक मोड़ दे देती है। लचीली कानून व्यवस्था भी बलात्कार के बढ़ती घटना के पीछे जिम्मेदार है.

पाश्चात्य संस्कृति का यदि अनुशरण करे तो हम उनकी ही तरह ईमानदार होते, राष्ट्र के प्रति समर्पित होते, राष्ट्रप्रेमी होते, अनुशासित होते, औरतों को समान अधिकार देते, बेटियों के जन्म पर उत्सव मनाते बजाय अपने भाग्य को कोसने के, जो हमें सम्पूर्ण मानव बनने में सहायक होती. आज के युग में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा देना इस बात की गवाही देता है कि भारत में औरतों की स्थिति क्या है! पश्चिम में औरतें पुरुषों से कदम मिलाए आगे बढ़ती जा रही है और भारत में उसे बचाने के लिए मुहिम चलाई जा रही है। सरकार द्वारा कई तरह की योजनाएँ लागू की जा रही है कि बेटी को माँ-बाप बोझ न समझे. वाबजूद इसके ढाक के तीन पात. आज हमारे देश की गिनती एशिया के भ्रष्ट देशों में प्रथम स्थान पर है। इसके लिए पाश्चात्य संस्कृति नहीं, भारतीय पुरुषों की कुंठित मानसिकता जिम्मेदार है।

-राजीव कुमार
हिंदी शिक्षक, दून पब्लिक स्कूल,
बेगूसराय, बिहार-८५११२६
मो.८५८१०२८६२२

समाज का संस्कारित होना अति आवश्यक है

लड़कियो के अर्द्ध नग्न घूमने पर जो लोग या स्त्रिया ये कहते है की कपडे नहीं सोच बदलो, उन लोगो से मेरे कुछ प्रश्न है!

1) हम सोच क्यों बदले? सोच बदलने की नौबत आखिर आ ही क्यों रही है? आपके अनुचित आचरण के कारण? और आपने लोगो की सोच का ठेका लिया है क्या?

2) दूसरी बात आप उन लड़कियो की सोच का आकलन क्यों नहीं करते? कि उन्होंने क्या सोचकर ऐसे कपड़े पहने कि उसके पीठ जांघे इत्यादि सब दिखाई दे रहा है. इन कपड़ो के पीछे उसकी सोच क्या थी? एक निर्लज्ज लड़की चाहती है की पूरा पुरुष समाज उसे देखे, वही दूसरी तरफ एक सभ्य लड़की बिलकुल पसंद नहीं करेगी की कोई उसे इस तरह से देखे

3) कुछ लड़किया कहती है कि हम क्या पहनेगे ये हम तय करेंगे, पुरुष नहीं...जी बहुत अच्छी बात है. आप ही तय कर, लेकिन हम पुरुष भी किन लड़कियो का सम्मान/मदद करेंगे ये भी हम तय करेंगे, स्त्रीया नहीं और हम किसी का सम्मान नहीं करेंगे इसका अर्थ ये नहीं कि हम उसका अपमान करेंगे.

सत्य यह है की अश्लीलता को किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता. ये कम उम्र के बच्चों को यौन अपराधो की तरफ ले जाने वाली एक नशे की दुकान है और इसका उत्पादन स्त्री समुदाय करता है. मष्तिष्क विज्ञान के अनुसार 4 तरह के नशो में एक नशा अश्लीलता भी है. यदि यह नग्नता आधुनिकता का प्रतीक है तो फिर पूरा नग्न होकर स्त्रीयां अत्याधुनिकता का परिचय क्यों नहीं देती? गली-गली और हर मोहल्ले में जिस तरह शराब की दुकान खोल देने पर बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है उसी तरह अश्लीलता समाज में यौन अपराधो को जन्म देती है।.

इसलिए पूरे समाज का संस्कारित होना अति आवश्यक है!

-नूतन शर्मा,
द्वारा हम लाये है तूफान से कस्ती निकाल कर, एन.एस.डी.वी. ग्रुप

हिन्दीतर भाषी रचनाकारः

ॐ नमः शिवाय

-विजय कुमार सम्पत्ति,
सिकंदराबाद, तेलांगना

भाग-8

आप ने जो भी कहाँ वह सब सत्य हैं, परन्तु ऐसा भी तो हो सकता हैं कि वहां हमारे जाने पर वे हमारा यथोचित सम्मान करे.

भगवान शिव ने सती से कहा, 'तुम्हारे पिता ऐसे नहीं हैं, वे हमारा सम्मान नहीं करेंगे, मेरा स्मरण आते ही दिन-रात वे मेरी निंदा करते हैं, यह केवल मात्र तुम्हारा भ्रम ही हैं.'

सती ने कहा, 'आप जाये या न जाये यह आपकी रुचि हैं, आप मुझे आज्ञा दीजिये मैं अपने पिता के घर जाऊंगी, पिता के घर जाने हेतु कन्या को आमंत्रण-निमंत्रण की आवश्यकता नहीं होती है. वहां यदि मेरा सम्मान हुआ तो मैं पिताजी से कहकर आप को भी यज्ञ भाग दिलाऊँगी और यदि पिता जी ने मेरे सनमुख आप की निंदा की तो उस यज्ञ का विध्वंस कर दूंगी.'

शिव जी ने पुनः सती से कहा, 'तुम्हारा वहां जाना उचित नहीं हैं, वहां तुम्हारा सम्मान नहीं होगा, पिता द्वारा की गई निंदा तुम सहन नहीं कर पाओगी, जिसके कारण तुम्हें प्राण त्याग करना पड़ेगा, तुम अपने पिता का क्या अनिष्ट करोगी?'

इस पर सती ने क्रोध युक्त हो, अपने पति भगवान शिव से कहा 'अब आप मेरी भी सुन लीजिये, मैं अपने पिता के घर जरूर जाऊंगी, फिर आप मुझे आज्ञा दे या न दे.' जिस से भगवान शिव भी क्रुद्ध हो गए और उन्होंने सती के अपने पिता के यहाँ जाने का वास्तविक प्रयोजन पुछा, 'अगर उन्हें अपने पति की निंदा सुनने का कोई प्रयोजन नहीं हैं तो वे क्यों ऐसे पुरुष के गृह जा रही हैं? जहाँ उनकी सर्वथा निंदा होती हो.'

इस पर सती ने कहा 'मुझे आपकी निंदा सुनने में कोई रुचि नहीं हैं और न ही मैं आपके निंदा करने वाले के घर जाना चाहती हूँ. वास्तविकता तो यह हैं, यदि आपका प्रकार अपमान कर, मेरे पिताजी इस यज्ञ को सम्पूर्ण कर लेते हैं तो भविष्य में हमारे ऊपर कोई श्रद्धा नहीं रखेगा और न ही हमारे निमित्त आहुति ही डालेगा. आप आज्ञा दे या न दे, में वहां जा कर यथोचित सम्मान न पाने पर यज्ञ का विध्वंस कर दूंगी.'

भगवान शिव ने कहा 'मेरे इतने समझाने पर भी आप आज्ञा से बाहर होती जा रही हैं, आप की जो इच्छा हो वही करें, आप मेरे आदेष की प्रतीक्षा क्यों कर रहीं हैं?

शिव जी के ऐसा कहने पर दक्ष-पुत्री सती देवी अत्यंत क्रुद्ध हो गई, उन्होंने सोचा, 'जिन्होंने कठिन तपस्या करने के पश्चात मुझे प्राप्त किया था आज वो मेरा ही अपमान कर रहें हैं, अब मैं इन्हें अपना वास्तविक प्रभाव दिखाऊंगी' भगवान शिव ने देखा कि सती के होंठ क्रोध से फड़क रहे हैं तथा नेत्र प्रलयाग्नि के समान लाल हो गए हैं, जिसे देखकर भयभीत होकर उन्होंने अपने नेत्रों को मूंद लिया. सती ने सहसा घोर अट्टहास किया, जिसके कारण उनके मुंह में लंबी-लम्बी दाढ़े दिखने लगी, जिसे सुनकर शिव जी अत्यंत हतप्रभ हो गए. कुछ समय पश्चात उन्होंने जब अपनी आंखों को खोला तो, सामने देवी का भीम आकृति युक्त भयानक रूप दिखाई दे रहा था, देवी वृद्धावस्था के समान वर्ण वाली हो गई थीं, उनके केश खुले हुए थे, जिह्वा मुख से बहार लपलपा रहीं थीं, उनकी चार भुजाएं थी. उनके देह से प्रलयाग्नि के समान ज्वालाएँ निकल रही थीं, उनके रोम-रोम से स्वेद निकल रहा था, भयंकर डरावनी चीत्कार कर रहीं थीं तथा आभूषणों के रूप में केवल मुंड-मालाएं धारण किये हुए थी. उनके मस्तक पर अर्ध चन्द्र शोभित था, शरीर से करोड़ों प्रचंड आभाएँ निकल रहीं थीं, उन्होंने चमकता हुआ मुकुट धारण कर रखा था. इस प्रकार के घोर भीमाकार भयानक रूप में, अट्टहास करते हुए देवी, भगवान षिव के सम्मुख खड़ी हुई.

उन्हें इस प्रकार देख कर भगवान शंकर ने भयभीत हो भागने का मन बनाया, वे हतप्रभ हो इधर उधर दौड़ने लगे. सती देवी ने भयानक अट्टहास करते हुए, निरुद्देश्य भागते हुए भगवान शिव से कहा, 'आप मुझसे डरिये नहीं!' परन्तु भगवान शिव डर के मारे इधर उधर भागते रहें। इस प्रकार भागते हुए अपने पति को देखकर, दसो दिशाओं में देवी अपने ही दस अवतारों में खड़ी हो गई. शिव जी जिस भी दिशा की ओर भागते, वे अपने एक अवतार में उनके सम्मुख खड़ी हो जाती। इस तरह भागते-भागते

जब भगवान शिव को कोई स्थान नहीं मिला तो वे एक स्थान पर खड़े हो गए. इसके पश्चात उन्होंने जब अपनी आंखें खोली तो अपने सामने मनोहर मुख वाली श्यामा देवी को देखा. उनका मुख कमल के समान खिला हुआ था, दोनों पयोधर स्थूल तथा आंखें भयंकर एवं कमल के समान थी. उनके केश खुले हुए थे, देवी करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान थीं, उनकी चार भुजाएं थीं, वे दक्षिण दिषा में सामने खड़ी थी.

अत्यंत भयभीत हो भगवान शिव ने उन देवी से पुछा, 'आप कौन हैं, मेरी प्रिय सती कहा हैं?'

सती ने शिव जी से कहा 'आप मुझ सती को नहीं पहचान रहें है, ये सारे रूप जो आप देख रहे है- काली, तारा, त्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती, मातंगी एवं कमला, ये सब मेरे ही नाना नाम है.' भगवान शिव द्वारा उन नाना देवियों का परिचय पूछने पर देवी ने कहा, 'ये जो आप के सम्मुख भीमाकार देवी हैं इनका नाम 'काली' हैं, ऊपर की ओर जो श्याम -वर्ना देवी खड़ी हैं वह 'तारा' हैं, आपके दक्षिण में जो मस्तक-विहीन अति भयंकर देवी खड़ी हैं वह 'छिन्नमस्ता' हैं, आपके उत्तर में जो देवी खड़ी हैं वह 'भुवनेश्वरी' हैं, आपके पश्चिम दिशा में जो देवी खड़ी हैं वह शत्रु विनाशिनी 'बगलामुखी' देवी हैं, विधवा रूप में आपके आग्नेय कोण में 'धूमावती' देवी खड़ी हैं, आपके नैऋत्य कोण में देवी 'त्रिपुरसुंदरी' खड़ी हैं, आप के वायव्य कोण में जो देवी हैं वह 'मातंगी' हैं, आपके ईशान कोण में जो देवी खड़ी हैं वह 'कमला' हैं तथा आपके सामने भयंकर आकृति वाली जो मैं 'भैरवी' खड़ी हूँ. अतः आप इनमें किसी से भी न डरे. यह सभी देवियाँ महाविद्याओं की श्रेणी में आती हैं, इनके साधक या उपासक पुरुषों को चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षतथा मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली है. आज मैं अपने पिता का अभिमान चूर्ण करने हेतु जाना चाहती हूँ, यदि आप न जाना चाहें तो मुझे ही आज्ञा दें.'

भगवान शिव ने सती से कहा, 'मैं अब आप को पूर्ण रूप से जान पाया हूँ, अतः पूर्व में प्रमाद या अज्ञान वश मैंने आपके विषय में जो भी कुछ अनुचित कहा हो, उसे क्षमा करें. आप आद्या परा विद्या हैं, सभी प्राणियों में आप व्याप्त हैं तथा स्वतंत्र परा-शक्ति हैं, आप का नियन्ता तथा निषेधक कौन हो सकता हैं? आप को रोक सकूँ मुझमें ऐसा सामर्थ्य नहीं हैं, इस विषय में आपको जो अनुचित लगे आप वही करें.'

इस प्रकार भगवान शिव के कहने पर देवी उनसे बोली, 'हे महेश्वर! सभी प्रमथ गणो के साथ आप यही कैलाश में ठहरे, मैं अपने पिता के यहाँ जा रही हूँ.' शिव जी को यह कह वह ऊपर खड़ी हुई तारा अकस्मात् एक रूप हो गई तथा अन्य अवतार अंतर्ध्यान हो गए, देवी ने प्रमथों को रथ लाने का आदेश दिया. वायु वेग से सहस्रों सिंहों से जुती हुई मनोरम देवी-रथ, जिसमें नाना प्रकार के अलंकार तथा रत्न जुड़े हुए थे, प्रमथ प्रधान द्वारा लाया गया। वह भयंकर रूप वाली काली देवी उस विशाल रथ में बैठ कर आपने पितृ गृह को चली, नंदी उस रथ के सारथी थे, इस कारण भगवान शिव को सहसा धक्का सा लगा.

दक्ष यज्ञ मंडप में उस भयंकर रूप वाली देवी को देख कर सभी चंचल हो उठे, सभी भय से व्याकुल हो गए. सर्वप्रथम भयंकर रूप वाली देवी अपनी माता के पास गई, बहुत काल पश्चात आई हुई अपनी पुत्री को देख कर दक्ष-पत्नी प्रसूति बहुत प्रसन्न हुई तथा देवी से बोलीं 'तुम्हें आज इस घर में देख कर मेरा शोक समाप्त हो गया हैं, तुम स्वयं आद्या शक्ति हो. तुम्हारे दुर्बुद्धि पिता ने तुम्हारे पति शिव की महिमा को न समझते हुए, उनसे द्वेष कर, यहाँ यज्ञ का योजन कर रहें हैं जिसमें तुम्हें तथा तुम्हारे पति को निमंत्रित नहीं किया गया हैं. इस विषय में हम सभी परिवार वालों तथा बुद्धिमान ऋषियों ने उन्हें बहुत समझाया, परन्तु वे किसी की न माने.

'सती ने अपनी माता से कहा! 'मेरे पति भगवान शिव का अनादर करने के निमित्त उन्होंने ये यज्ञ तो प्रारंभ कर लिया हैं, परन्तु मुझे यह नहीं लगता हैं की यह यज्ञ निर्विघ्न समाप्त होगा.' उनकी माता ने भी उन्हें ब्रह्म मुहूर्त में आयें हुए स्वप्न से अवगत कराया, जिसमें उन्होंने देखा की इस यज्ञ का विध्वंस, शिव गणो द्वारा हो गया हैं. इसके पश्चात सती अपनी माता को प्रणाम कर, अपने पिता के पास यज्ञ स्थल पर गई.

गीत

राम मिले सीता को जैसे, मुझको भी तुम मिल जाओ
तोड़ धनुष को वरण करो तुम, राम मेरे तुम बन आओ
नहीं मांगती बंगला गाडी, नहीं मांगती मैं सोना
कुछ छोटे-छोटे सपने हैं, आकर पूरे कर जाओ
.... राम मेरे तुम बन आओ
युग-युग से प्यासी है धरती, आकर अगन बुझा जाओ
घट-घट बैठी कोटि अहिल्या, आकर उन्हें जिला जाओ
.........................राम मेरे तुम बन आओ
दुर्योधन, दशग्रीव बने सब, नारी हाहाकार करे
मर्यादा पुरुषोत्तम हो तुम, आकर पाठ पढ़ा जाओ
...........................राम मेरे तुम बन आओ
साधू-संत सियाने जितने, सब माया के लोभी हैं
बच न सकी सोने की लंका, त्रेता याद दिला जाओ
...........................राम मेरे तुम बन आओ

-डॉ० पूनम माटिया, दिल्ली

ग़ज़ल

तेरे हाथ न रोटी, उत मुर्गा की टाँगें-बोटी
नेता उड़ा रहे रसगुल्ला, प्यारे देख जरा।
खड़ी सियासत नंगी, जिसकी हर चितवन बेढंगी
ये बेशर्मी खुल्लमखुल्ला, प्यारे देख जरा।
नेता करें सभाएँ, छल को नैतिक-धर्म बताएँ
इनके अपशब्दों का कुल्ला, प्यारे देख जरा।
गर्दन कसता फंदा, छीले सुख को दुःख का रंदा
सर पै रोज सियासी टुल्ला, प्यारे देख जरा।
नश्वर जगत बताकर, तेरे भीतर स्वर्ग जगाकर
लूटने जुटे पुजारी-मुल्ला, प्यारे देख जरा।

02

त्यागी वे चौपालें, मन की व्यथा जहाँ बतिया लें
अब तो चिलम-'बार के हुक्का' हमको प्यारे हैं।
नूर टपकता हरदम, उन बातों से दूर हुए हम
लुच्चे लपका लम्पट फुक्का हमको प्यारे हैं।
हर विनम्रता तोड़ी, हमने रीति अहिंसक छोड़ी
गोली चाकू घूँसा मुक्का हमको प्यारे हैं।
कोकक्रिया के अंधे, हमने काम किये अति गन्दे
गली-गली के छिनरे-लुक्का हमको प्यारे हैं।
धर्म-जाति के नारे, यारो अब आदर्श हमारे
सियासी धन-दौलत के भुक्का हमको प्यारे हैं।

-रमेशराज, ईसानगर, अलीगढ़

हाँ मैं नारी हूँ

सिर्फ काया ही नहीं अपने तन से ऊपर हूँ,
और इस जग की सजग चिंतन प्राणी हूँ,,
हाँ मैं नारी हूँ
यूं तो खुद में पूर्ण बहुत हूँकृपर,
बिन तुम्हारे अधूरी सी कहानी हूँ,,
हाँ मैं नारी हूँ
कभी नदी की लहरों की तरह मद्धम्,
कभी सागर की तेज रवानी हूँ,,
हाँ मैं नारी हूँ
कभी कोयल सी गुनगुनाती,
तो कभी शेरनी की हुंकार हूँ,,
हाँ मैं नारी हूँ
हूँ माँ की आँखों की लाडली,
पर क्या पिता के सर पर बोझ भारी हूँ?
हाँ मैं नारी हूँ
कभी हूँ घर की वैभव-लक्ष्मी, ज्ञानवर्धक सरस्वती,
कभी रूद्र भयंकर काली हूँ,,
हाँ मैं नारी हूँ
देखा मैंने लोगों को नारी का अस्तित्व मिटाते हुए,
फिर भी जग से लड़ती हुई उन एक-एक पर भारी हूँ,,
हाँ मैं नारी हूँ!

-रेखा दुग्गल
पीएचडी., दिल्ली विश्वविद्यालय, 9717548597

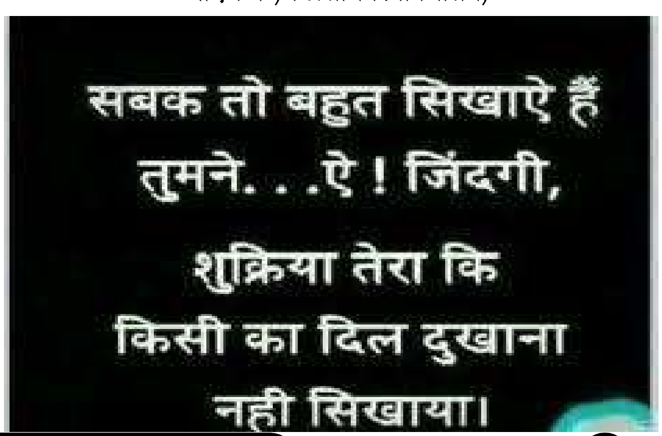

कवि परिचयः

रीता राम दास की कविताएं

३४/६०३, एच० पी० नगर पूर्व,
वासीनाका, चेंबूर, मुंबई-४०००७४.

१

बदलते
बौखलाते
असहज होते लोग
सहजता के साथ
साक्षर विचारों की जघन्य हत्या
और व्यवस्था के बदलाव पर
शांतता से सांस लेने की
कर रहे हैं कोशिश
जानते हुए कि
इस दौर में
जिंदा रहना
चुनौती ही नहीं
खुद से बर्बर होना है।

२

प्यार में
नहीं बचा पा रहे है हम
प्यार जैसा कुछ
नहीं रह गई स्वाभाविकता
इस पर बंधन डाले जा रहे है
बढ़ने नहीं दिया जा रहा
पनपने नहीं दिया जा रहा
लगाई जाती रही है पाबंदियाँ
समझ है कि
प्यार से हो सकता है समाज दूषित
ऐसी मानसिक चेतना कि
हो सकती है संस्कृति दागदार
मानवता को कैसे
कोई अर्थ दे पाएंगे हम
काटकर इसके पर
प्यार में बचा रहे
प्यार का अर्थ
अपने पूरे स्वाभाविकता में
निस्वार्थ पवित्रता से अलग
कुछ भी नहीं।

३

उस संस्कृति को पूजना
असंभव लगता है
जो घर से बाहर धकियाती है
सर्वस्व ले लेने के बाद
नारी की आभा को करने स्खलित
समाज की विकलांग मनोकामनाएँ
खारिज करेगी स्त्री
बनाकर अपना घर
करते हुए अर्थोपार्जन
न निभाते हुए परंपरा
न करते हुए शादी
करते हुए पैदा
एक युग
जिसके पिता का नाम
समाज से नहीं
रीति-रिवाज से नहीं
सूर्य से हो
आत्मा से हो
मन से हो
दिल से हो
जिसका तेज सिर्फ देह से नहीं
स्त्री देह से होते हुए
स्त्री के भीतर से उठेगा।

कहानी

अब मेरी बारी है

'क्या आप लोग मुझसे खुश नहीं हैं? आपके राजी होने पर ही पिताजी ने बात आगे बढ़ाई होगी. विक्रांत मेरे साथ क्यों नहीं रहते?' सासु माँ ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा 'तो माँ-बाप ने असलियत छुपा ली? तुम्हे कुछ न बताया?' 'क्या असलियत?

-कविता विकास,
धनबाद, झारखण्ड

भाग-२

एक हफ्ते का समय निकल गया. इस बीच मैंने विक्रांत को घर में कभी कभार ही पाया. मेरे पास आने का तो सवाल ही नहीं, मुझसे बात तक करने की जरुरत नहीं समझते. लगता था जैसे किसी को मेरी जरुरत नहीं थी, मैं एक डमी सी थी. समय पर चाय-नाश्ता, खाना-पीना मिल जाता. मेरे लिए कई नौकर थे, मुझे कुछ करते देख सासु माँ तुरंत नौकरों को डाँट लगाती. एक दिन सब्र का बाँध टूट गया. दस दिन बीतने को आये. रात को करीब दस बजे मैंने सासु माँ के कमरे का दरवाजा खटखटाया, लगता था जैसे वह मेरे प्रश्नों का इंतजार कर रहीं थी. मैंने आक्रोश से पूछा, 'क्या आप लोग मुझसे खुश नहीं हैं? आपके राजी होने पर ही पिताजी ने बात आगे बढ़ाई होगी. फिर यह रूखापन क्यों? विक्रांत मेरे साथ क्यों नहीं रहते?' सासु माँ ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा 'तो माँ-बाप ने असलियत छुपा ली? तुम्हे कुछ न बताया?' 'क्या असलियत? 'यही कि मेरे बेटे ने अपने दादा की बात रखने के लिए तुमसे विवाह किया है. तुम्हे यहां अपार धन-दौलत मिलेंगे, कोई कमी नहीं होगी, बस केवल विक्रांत से दूर रहना होगा.' मैं सकते में आ गयी, 'आखिर क्यों?' 'इंतजार करो, इसका भी जवाब मिल जाएगा.' कहते हुए सासु माँ उठ कर जाने लगीं. मैंने उनके पैर पकड़ लिए, पर वह करीबन धक्का देते हुए निकल गयीं. मैंने अपने कमरे में पहुँच कर विक्रांत को फोन लगाया. लगता था, आज ही फैसला हो जाए, इतने दिनों का नाटक अब खत्म हो जाए. फोन किसी महिला ने उठाया, 'अच्छा तो मन नहीं लग रहा क्या? विक्रांत से तुम बात नहीं कर सकती, वह अभी -अभी सोये हैं.' 'वह सो रहे हैं और मैं उनके इंतजार में पंद्रह दिन से जाग -जाग कर रात बिता रही हूँ.. कौन हैं आप?' उधर से एक खनकती हुई आवाज आयी, 'मैं मोना हूँ, विक्रांत की पत्नी.' कह कर फोन काट दिया गया. गुस्से और अपमान में पैर पटकती हुई मैं सासु माँ के कमरे में गयी, लेकिन रास्ते में महरी ने रोकते हुए कहा कि वह आराम कर रहीं हैं और किसी को उनसे मिलने की इजाजत नही है. ऊहापोह की स्थिति में मैंने पिताजी से भी बात करना चाहा, लेकिन पहले मैं विक्रांत से सारा माजरा समझना चाहती थी. थोड़ी देर बाद विक्रांत मेरे कमरे में आये. उन्हें देखते ही मैं गुस्से से कांपने लगी. चिल्लाते हुए मैंने पूछा 'क्यों किया ऐसा धोखा मेरे साथ? मेरी जिन्दगी बर्बाद कर दी. आपके इस छल में आपका पूरा परिवार शामिल है.' कर्नल के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी. उसने बड़ी शांत मुद्रा में कहा 'अपने पापा से पूछो, उन्हें सब पता है. उन्होंने नंबर मिलाते हुए मुझे फोन पकड़ा दिया. मैंने रोते हुए पूछा, 'पापा ये क्या कह रहे हैं...क्यों मेरे साथ खिलवाड़ किया?' पापा की आवाज मानो अपराध भाव से थर्रा रही थी. बहुत सँभालते हुए उन्होंने कहा, 'देखो बेटा, ये लोग सारी सुविधा तुम्हे दे रहे हैं. तुम्हारी शादी की बात कही नही बन रही थी. तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारी बहनों की भी उम्र निकली जा रही थी. जब तक तुम यहां रहती, इन दोनों को कैसे निबटाता मैं?' 'निबटाता? यानी हम सब बोझ हैं, पापा? इतने दिनों का साथ, प्यार-मनुहार सब झूठा था? ऐसी शादी से तो अच्छा था, आप मुझे घर छोड़ कर कहीं और चले जाने कह देते. कम से कम अकेली जिन्दगी इससे बेहतर होती.' 'नहीं बेटा, अविवाहित लड़की को घर में बिठाना अनेक सवालों को जन्म देता है. फिर कोई लड़का तुम्हारी बहनों को नहीं मिलेगा.' पापा ने कहा. मैंने भी तैश में कहा, 'तो क्या अब आप पर कोई सवाल नहीं उठेगा?' 'नही बेटा, तुम वही रहो, यहाँ आने का मन नहीं बनाना, अपनी बदनामी मैं नहीं सह पाऊंगा. नन्ही-गुड्डो की शादी में भी अड़चनें आएँगी.' मैंने तत्काल फोन काट दिया. कर्नल साहब मेरे चेहरे पर आते-जाते भाव देख रहे थे. अचानक कहा, 'तुम्हे यहां कोई कमी नहीं होगी. सब तुम्हें बहू मानते हैं. तुम चाहो तो नौकरी कर लो. समय कट जाएगा.' उस वक्त मैं कोई सलाह सुनने के मूड

में नहीं थी. मैंने उनसे मुझे अकेला छोड़ देने को कहा. उनके जाते ही मैंने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया. कुछ देर परेशान रही. मुझे शादी के पहले की कुछ बातें याद आने लगीं. क्यों सुखदेव अंकल के आते ही हमें बाहर भेज दिया जाता था या फिर नोटों की गड्डियाँ जिसे पिताजी बक्से में रख रहे थे, तो यह सब पापा का मुंह बंद रखने के लिए दिया गया था. मैंने फिर से अपने घर फोन लगाया. माँ ने फोन उठाते हुए कहा, 'बेटा, इन बातों को ज्यादा मत उछालो. अपने घर की बात घर में ही रखो.' 'कौन सा घर माँ? अब न तो मेरा मायका रहा और न ही ससुराल. बिन दहेज की शादी के बदले मेरी जिन्दगी का सौदा कर डाला आपने. खैर, आप चिंता न करना, मैं अपना दुखड़ा लेकर कभी नही आऊँगी आप लोगों के पास, लेकिन ऐसा धोखा -धड़ी नन्ही और गुड्डो के साथ कभी न करना. उन्हें अपनी वैवाहिक जीवन को खुशी-खुशी जीने देना.' इतना कह कर मैंने फोन काट दिया.

रात भर में कुछ नया सोचना था. कुछ पल तक अपने को असहाय समझने वाली श्वेता अब आत्मविश्वास से भरी हुई थी. मैंने मामले के तह तक जाने की ठानी. इसके लिए अपने-आप को नार्मल रखना आवश्यक था. दूसरे दिन सासु माँ के सामने मैंने रात की घटना का जिक्र नहीं किया. उन्हें इन सबसे कोई मतलब भी नहीं था. सवेरे मुझे स्थानीय कालेज में अपना आवेदन देने जाना था. सासु माँ ने ड्राइवर के साथ भेज दिया.

मौका पाते ही मैंने ड्राइवर अंकल से कहा, 'चाचा, आप तो बहुत पुराने हो इस घर में, क्या बता सकते हैं आखिर किसको मात देने के लिए मुझे मुहरा बनाया गया है?' चाचा ने एक जगह पर गाड़ी रोक दी और कहा, 'मुझे तुमसे पूरी हमदर्दी है बेटा, तुम्हे सचमुच मुहरा बनाया गया है.' विक्रांत के दादाजी अपनी बहू से खुश नहीं थे. विक्रांत के पिताजी की एक न चलती थी. उसके दादाजी पुराने विचारों के थे. विक्रांत सेना में भर्ती होने के बाद काफी अय्याश हो गया था. उसकी गलत आदतों पर रोक लगाने के लिए उन्होंने एक शर्त रखी कि वह स्वजातीय लड़की और उनकी पसंद की लड़की से विवाह करेगा तभी उनकी संपत्ति का वारिस होगा. करीब सात महीने पहले वे पैरालिसिस के शिकार हो गए. तबियत सुधारने की बहुत कोशिश की गयी लेकिन उनकी हालत दिन ब दिन बिगड़ती गयी. अभी वे गांव में अपने भाई के घर पर हैं और शायद आज कल के ही मेहमान हैं. इसलिए उनकी इच्छा के अनुसार जल्दबाजी में तुमसे विक्रांत का विवाह करवाया गया, जबकि उनके गांव जाते ही विक्रांत ने अपने बास की बेटी से शादी रचा ली. यह सब उन्हें नहीं बताया गया है.' ड्राइवर चाचा ने एक सांस में सारी बात बता दी. साथ में इशारा भी किया कि उसे अपने पैरों पर खड़ा होकर उनसे अलग हो जाना चाहिए क्योंकि जैसे ही दादा जी की मौत हो जाएगी, मोना और विक्रांत यहीं आ कर रहने लगेंगे. कालेज में आवेदन देने के बाद जल्द ही मेरा इंटरव्यू हुआ और मुझे नौकरी भी मिल गयी. इस बीच महीने भर का समय निकल गया. घर में मुझे हर किस्म की आजादी थी. सास ज्यादातर अपने कमरे में रहतीं. कभी-कभार मेरी उनसे बात होती. पति के सुख से वंचित रहने के अलावा और कोई दबाव या शर्त मुझ पर नहीं था. हाँ, गांव से रोज दिन दादा जी के साथ सासु माँ की बातचीत होती और किसी के आने पर मुझे विक्रांत की पत्नी की तरह पेश आना पड़ता. यही दिखावा मुझसे बर्दाश्त नहीं होता पर मैं बेबस थी. आखिर एक दिन कालेज से मेरी नियुक्ति का पत्र मिला. मैंने सासु माँ को दिखाया. उनके चेहरे पर सामान्य सा भाव रहा. मैंने माँ को भी फोन पर यह जानकारी दी. माँ ने बधाई देते हुए कहा, 'चलो, तुम्हे अपने परिश्रम का फल मिल गया. तुम्हारे घर का खालीपन अब तुम्हे नही काटेगा. तुम व्यस्त रहोगी और तुम्हारे पैसों से तुम्हे आत्मबल मिलेगा.' मेरे जीवन को जानबुझ कर नरक बना कर शायद कुछ ग्लानि महसूस हुई होगी इसलिए उन्होंने मेरे इस नए कदम का स्वागत किया. मेरे नौकरी ज्वाइन करने पर घर के नौकर-चाकर बहुत खुश थे. एक अबोला, प्यारा सा रिश्ता उन के साथ जुड़ गया था.

फिर एक दिन वह दिन भी आ गया जिसके बाद के परिणाम को देखने के लिए घर में सभी बेताब थे. दादा जी का देहांत हो गया. उनकी मृत्यु के एक दिन पहले सासु माँ और विक्रांत गांव चले गए थे. वे वहाँ से सारे काम -काज निबटा कर आने वाले थे. किसी ने मुझे वहाँ नहीं बुलाया. वे मुझे दादा जी से दूर ही रखना चाहते थे. इस बीच कालेज में मेरी अनेक सहेलियां बनीं. उनमे से एक ने मेरी कहानी सुनकर सलाह दी कि अभी अच्छा मौका है, मुझे उनसे अलग हो जाना चाहिए. पर मैंने यह सलाह नहीं माना. इतना अवश्य किया कि एक कमरे के एक फ्लैट किराये पर लेकर जरुरत के सामान वहाँ इक्कट्ठा करना शुरू किया. इसकी खबर केवल ड्राइवर चाचा को थी. हफ्ते भर के बाद सासु

माँ और विक्रांत वापस आ गए. तीन -चार दिनों के बाद एक दिन सवेरे में विक्रांत मेरे कमरे में आये और एक लिफाफा पकड़ाते हुए कहा, 'इसमें तलाक के पेपर्स हैं, दस्तखत कर देना' 'मैंने पेपर्स इत्मीनान से ले लिया और कहा, 'कल तो कोर्ट का काम ऐसे भी नहीं होगा, रविवार है. आप परसों ये पेपर्स ले लेना.' इतने निर्विकार भाव से दिए मेरे जवाब से विक्रांत हड़बड़ा गए. उन्हें लगा था मैं कुछ होहल्ला मचाऊँगी, इसलिए उनके साथ सासु माँ भी आईं थीं जो दरवाजे पर खड़ी थीं.

सोमवार की सुबह मेरे कालेज जाने के पहले विक्रांत तलाक के कागजात लेने आये. बैठक कक्ष में वे सासु माँ के साथ बैठे थे, वही से उन्होंने मुझ तक खबर भिजवाया. तलाक के पेपर्स के साथ एक बड़े बैग को लिए मैं नीचे आयी और उनके सामने खड़ी होकर कहा, 'आपको तलाक के पेपर्स चाहिए न, ये लीजिये. उन्होंने उसे खोलकर पढ़ा और वाक्यों में परिवर्तन देख कहा 'ये तो वो पेपर्स नहीं हैं.' मैंने उनके लिफाफे को बैग से निकाल कर कहा 'हाँ, आपके पेपर्स ये हैं और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए. सासु माँ ने मुझ पर झपटते हुए कहा, 'ये क्या कर रही है नालायक?' मैंने उन्हें एक हाथ से रोकते हुए कहा, 'नालायक मैं नहीं, आप हैं और आपके सुपुत्र जिन्होंने मेरे साथ-साथ अपने दादा जी को भी अँधेरे में रखा.' तलाक आप नही देंगे, मैं आपको दूंगी,' विक्रांत से मुखातिब होते हुए मैंने कहा. अदालत में आवारागर्दी और ऐय्याशी का इलजाम लगाते हुए पहली पत्नी के होते दूसरी शादी रचाने का भी इलजाम आप पर होगा. विक्रांत ने मेरी बांह पकड़ कर चिल्लाते हुए कहा, 'पागल हो गयी हो क्या, तुम इस घर की बहू हो.' मैंने भी चिल्लाते हुए कहा, 'किस बहू की बात कर रहे हो आप? कितने दिन मेरे साथ बिताये हैं?' सुनते ही सासु माँ ने कहा, 'तुम्हारे पिताजी को इसी की मोटी रकम तो चुकाई थी हमने, बदले में तुम्हे वही करना होगा जो हम चाहते हैं.' मैंने विरोध करते हुए कहा 'पिताजी को उनकी साधारण आय और तीन बेटियों की चिंताओं को हल्का करने का वास्ता देकर आपने जो सौदा किया उसका पाई-पाई तो मैंने अपनी खुशियाँ बलिदान कर चुका दी. अब आपको वही करना पड़ेगा जो मैं चाहूंगी और जो कोर्ट का आदेश होगा' कहते हुए मैंने अपने बैग को उठाते हुए कहा, 'यह घर आपको मुबारक हो। मैं अपनी जिन्दगी अपने अनुसार जीने के लिए जा रही हूँ.' कहते हुए मैं बाहर निकल गयी.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र मेंः कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) **गद्य के क्षेत्र में**ः डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) **हिन्दी सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। **समाज सेवा के क्षेत्र में**ः समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **कलाश्रीः** (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए), **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान** -(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो) **विशेषः** १. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. २.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

अंतिम तिथिः 30 नवम्बर 2018

अध्यक्ष,

पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सेवा समिति

65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,
धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,
मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

धारावाहिक लघु उपन्यास

निर्भया

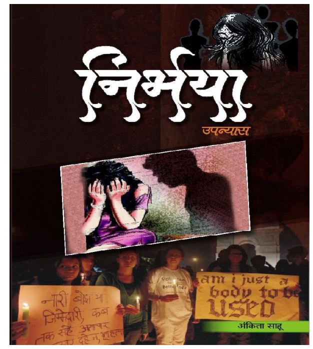

'तुमने क्या सोचा था, मैं ये सब कहूंगा, तुमसे माफी मांगूगा. तू एक बात समझ लें, मेरे लिए ये प्यार की निशानी नहीं, बिस्तर की निशानी है और ऐसी कोई जो मेरे रास्ते का कांटा बने, मैं उसे जड़ से खत्म कर दूंगा'

✍**अंकिता साहू**, इलाहाबाद, उ.प्र.

भाग-29

अंतिम कड़ी

राघव कुछ तो बोलने की कोशिश करता है, पर बोल नहीं पाता.

निर्भया-देख, अपंग मैं हो गयी हूं, और ये भी तूने ही किया है, कभी पत्थर से मरवाकर तो कभी खुद मारकर लेकिन तू तो ठीक है ना, तो फिर तू कुछ कहता क्यूं नहीं. देख आज मैं नहीं तू पूरी तरह से अपंग हो गया है. नारी को आज भी दी जाने वाली हर गाली का आधार पुरुष ही रहता है. अगर वो किसी पुरूष से प्यार करें तो कुल्टा, किसी के साथ भाग जाए तो चरित्रहीन, ...पर आज तू कुल्टा है, चरित्रहीन है राघव या फिर इससे भी घटिया.

(निर्भया की सांस फूलने लगती है, तुरन्त अतुल उसके पास आ जाता है. उसे पानी देता है, निर्भया थोड़ी देर शान्त होती है. ..फर बोलना शुरू करती है.)

(अतुल की तरफ इशारा करते हुए) ये मेरा भाई है....अतुल. ये मुझे अपना आदर्श मानता था और इतना कुछ होने के बाद अभी भी मानता है. सर इसे पूरा विश्वास था कि एक दिन इसकी दीदी बहुत बड़ी वकील बनेगी. इसने अपने स्कूल वालों से गर्व के साथ कहा था कि मेरी दीदी एक दिन इतनी बड़ी वकील बनेगी कि पूरे देश में नाम होगा. सर, कल का अखबार अगर इसके स्कूल वाले पढ़ेगे तो मेरे भाई पर हंसेगें कि...पापा के गुजरने के बाद मेरी मां ने मुझे अतुल के पिता के रूप में स्थान दिया क्योंकि मैंने अतुल को सफल आदमी बनाने का सपना देखा, पर.....अतुल, भैया मुझे माफ कर दे. मैं ना तेरी पापा बन पायी, ना तो तेरा आदर्श. जज साहब राघव ने ना सिर्फ मेरे सपनों को तोड़ा, बल्कि मेरी मां की उम्मीदों कों, मेरे भाई के आदर्श को चकनाचूर कर दिया। इस दरिन्दें को सजा मिलनी ही चाहिए.

विरोधी पक्ष-जज साहब! रोना-धोना बहुत हो गया. राघव के मां-बाप है ही नहीं वरना, वो भी यहां होते तो इसी तरह का कोई ड्रामा करके रोते और रूलाते......

जज-निर्भया, मैं आपसे सहानुभूति रखता हूं पर वकील होने के नाते आपको पता होगा कि कानून सबूतों के आधार पर फैसला लेता है तो आपको राघव के खिलाफ कोई सबूत दिखाना ही पड़ेगा.

निर्भया-जी सर...मुझे पता है.

(अतुल कटघरें में आता है.)

सर, शायद इनको सुनने के बाद आप सही फैसला ले सके. सर मैं अपने दीदी से बहुत प्यार करता हूं. मैंने अपने दीदी को बहुत दर्द सहते देखा है. सर मैं बहुत छोटा हूं पर अगर सच में आज मेरी बहन को इंसाफ नहीं मिला तो राघव को मार डालूंगा. दीदी, तुम हमेशा मेरी पापा रहोगी और स्कूल वाले या फिर दुनिया वाले क्या सोंचेगे मुझे अब इसकी परवाह नहीं है, पर तुम्हें इंसाफ मिलना चाहिए और आज इतना सब होने के बाद भी तुम मेरी आदर्श पहले की तुलना में और ज्यादा हो गयी हो. अगर वो तुम्हारी बच्ची थी तो मेरी भी कुछ लगती थी. इस कमीने ने तुमसे, तुम्हारी सबसे बड़ी खुशी, तुम्हारे तन का हिस्सा छीना है. दीदी तुम हर बार मुझे मेरी दीदी के रूप में मिलो, दीदी तुमने जो तकलीफें सही, उसमें मैं कुछ कर नहीं पाया, इसलिए मैं हाथ जोड़कर माफी मांगता हूं. मैं तुम्हें सैल्यूट करता हूं.

(निर्भया सिसक-२ कर रोने लगती है. अतुल रिकार्डिग आन कर देता है)

'तुमने क्या सोचा था, मैं ये सब कहूंगा, तुमसे माफी मांगूगा. तू एक बात समझ लें, मेरे लिए ये प्यार की निशानी नहीं, बिस्तर की निशानी है और ऐसी कोई जो मेरे रास्ते का कांटा बने, मैं उसे जड़ से खत्म कर दूंगा'

(राघव यह रिकार्डिग सुनकर सन्न रह जाता है. कोर्ट में मौजूद सब आश्चर्य चकित हो जाते है. राघव घुटने के बल धरती पर लड़खड़ा कर बैठ जाता है)

निर्भया-'सर, जिस वक्त ये मेरे बच्चे को खत्म करने आया था, उस वक्त मेरे मोबाईल में वॉइस-रिकार्डर ऑन

था, क्योकि मैं उस वक्त अपने केस के लिए अपने आपको तैयार कर रही थी. मेरा मतलब जब भी मैं केस की तैयारी करती हूं तो जो भी मुझे अपने मुवक्किल के पक्ष में कहना होता है, उसकी प्रेक्टिस बोल-बोलकर करती हूं ताकि बाद में अपनी आवाज सुनकर समझ सकूं कि मैंने क्या गलत किया और तभी इसमें राघव की आवाज भी रिकार्ड हुई.

सर, इसके अलावा भी अखबार की ये कटिंग्स देखिये. इसमें मेरे और राघव की तस्वीर है. जब हम घूमने गये थे, तब मीडिया वालों ने हमारे प्यार के चर्चे को अखबारों पर छापा. ये साबित करेंगे कि मेरे और राघव के बीच में भले ही मेरे तरफ से, पर कोई रिश्ता था. अब फैसला आप पर....

दूसरे पक्ष के वकील चुप हो जाते हैं. संकल्प, प्रगति, शिवांग, मां, अर्पणा, अतुल और सैकड़ों लोग कोर्ट में खड़े होकर एक साथ एक आवाज में कहने लगते हैं, निर्भया को इंसाफ दो, निर्भया के बच्ची के हत्यारे को सजा दो, राघव हत्यारा है वी वान्ट जस्टिस, वी वान्ट जस्टिस,.....

कोर्ट में चारो तरफ 'राघव हत्यारा है' और 'वीं वान्ट जस्टिस' की आवाजें गूंजने लगती है. निर्भया फूट-फूटकर रोने लगती है, सबकी आंखों से आंसू बरसने लगते हैं. नारों और सिसकियों से सारा वातावरण गूंजने लगता है.

जज-आर्डर, आर्डर.....

(सब शान्त हो जाते है)

जज राघव की तरफ देखते हुए कहते हैं, राघव तुम्हें अब भी कुछ कहना है. राघव सिर झुकाकर, कुछ ना कहने का इशारा करता है. राघव की सारी अकड़ खत्म हो जाती है.

जज साहब अपना फैसला सुनाते हुए कहते हैं-'झूंठ की फिदरत ही आक्रामक होती है. वह अपने आक्रामकता से हमेशा सच को छिपाने, सच को दबाने की कोशिश करता रहा है और करता रहेगा. पर ज्यादा महत्वपूर्ण यह होता है कि सच को दिखाने और उसको साबित करने की ललक, तड़प हममें कितनी है, क्योंकि सच्चाई की फिदरत एक आग की तरह होती है, जितनी ज्यादा अपने तड़प की हवा देंगे उतनी ही तीव्रता से वो चारो तरफ फैलेगी. निर्भया ने भी सच को साबित करने के लिए अपने आपको पूरी तरह झोंक दिया. निर्भया बहुत बहादुर लड़की है. प्रेम संवेदनशील होता है, प्रेम की संवेदनशीलता को राघव ने तहस-नहस कर दिया फिर भी निर्भया ने कभी हार नहीं मानी. निर्भया एक नाम नहीं बल्कि एक प्रतीक है, मेरी नज़रों में. सत्य का प्रतीक, प्रेम का प्रतीक, कानून के रखवाले का प्रतीक, अहिंसा की प्रतीक, काली का प्रतीक. बेटी, तुम जीत गयी इस केस में मैं फैसला सुनाता हूं कि राघव ने तुम्हारे प्रेम के साथ छल किया और तुम्हारे पेट में पल रहे बच्चे की निर्ममता से हत्या की है और इन सबको छिपाने के लिए तुम्हारें ऊपर भी हमले करवायें. इन सारे गुनाह को मद्दे नजर रखते हुए मैं राघव को .....(निर्भया बीच में रोक देती है जज को)

निर्भया-सर, मैं अपनी एक बात कहना चाहूंगी कि इस कमीने को फांसी ना सुनायी जाए बल्कि इससे इसकी वकालत छीन ली जाए क्योंकि फांसी में मौत का दर्द तो क्षणों का होगा पर इसकी डूबती हस्ती इसको हर रोज, एक-एक क्षण इसको मारेगी. इसी खोखली हस्ती के लिए इसने मुझसे रिश्ता तोड़ा, मेरी बच्ची को मारा था.

जज-राघव को उम्र कैद की सजा और वकालत की डिग्री जब्त करने का आदेश देती है और निर्भया के ठीक होने तक उसका उपचार और उसके बाद वकालत जारी रखने का आदेश देती है. मैं एक बार सबसे खड़े होकर निर्भया को सैल्यूट करने का आग्रह करता हूं. सब खड़े होकर निर्भया को उसकी बहादुरी के लिए सलाम करते हैं.....राघव सिर झुकायें, वहीं हाथ जोड़े खड़ा रहता है और निर्भया वास्तव में 'निर्भया' होकर नई जिंदगी जीने लगती है।

समाप्त

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

लघु कथा प्रतियोगिता २०१८ के अंतिम चरण में चयनित ५ लघुकथाएं

विदाई

-बलिराम महतो 'हरिचेरा'
शारदा सदन, गोकुल मथुरा,
पो०-रिफातपुर-813209, भागलपुर, बिहार

होशियारपुर के राम बाबू अपनी नई-नवेली पत्नी को घर पर छोड़कर नौकरी की तलाश में बाहर गये तो दो वर्षो तक पेट पोसते अपनी पत्नी को विसारे बाहर ही बाहर रह गये. इस बीच उनकी पत्नी अपने भाई के साथ अपने मायके चली आयी. जब वे अपने घर वापस आये तो उसे विदा कराकर अपने घर लाने के लिए ससुराल चले गये. उनके ससुरजी ने कहा, 'भले पाहुनजी, आप तो पढ़े-लिखे बुद्धिमान व्यक्ति हैं. लेकिन जब आप इतने बेखबर हैं तो आप जवाब दे दें.'

राम बाबू ने कहा-'बाबूजी, यह तो समझ का फेर है. अब तक मैंने अपने जीवन के भविष्य को संवारने के निमित्त विवशतावश वैसा कुछ किया. अब वैसा नहीं होगा. अब मैं अपनी सुविधानुसार अपने साथ रखूंगा. भविष्य में कभी मैं आपको किसी भी तरह की शिकायत का मौका नहीं दूंगा.'

उनके (राम बाबू के) ददिया ससुरजी भी वहीं उपस्थित थे. उन्होंने कहा-'पाहुनजी ठीक कहते हैं.'

सासुजी ने कहा-'मेरी बेटी कहती है, माँ, पिताजी, लाख से लीख हो जाय, मैं उस घर में नहीं जाऊँगी, नहीं जाऊँगी. वहाँ लात नहीं लगाऊँगी, पांव न ढारूं. मैं आजीवन तुम्हारे ही घर में अपने भाईयों की तरह ही खटती-खाती, बैठकर नहीं रह जाऊंगी. सिर का बोझ नहीं बनूंगी. दूसरी शादी भी हरगिज नहीं करूंगी. इसी में मेरी भलाई है आप लोगा की पगड़ी पर भी किसी सूरत से आंच नहीं आने दूंगी. यह भी स्वीकार न हो तो बहती गंगा में ले जाकर मुझे भंसा दो, जल समाधि दिला दो, तर जाऊंगी. यहीं नहीं, काट-कूटकर गीध, कौओं, कुकुर-सियारों को ही खिला दो. यह स्वीकार है. यदि नहीं रहने देना चाहो, तो नहीं रहने देना. यदि चाहो तो तुम लोगों की शरण में अलग झोपड़ी लगाकर भी रह लूंगी. तुम लोगों का दाना नहीं खाकर, खटकर, मजदूरी कर अलग पकाकर, खाकर रहूंगी. अन्ततः यह कि निकाल बाहर कर दो तो भीख नहीं मांगूगी. किसी कुटिया-आश्रम में जाकर योग रमाऊंगी. संन्यासिनी बन धुनि जलाऊंगी, भस्त लगाऊंगी. लेकिन उस घर में भेजने का नाम न लेना. हे माताजी, हे पिताजी! तेरे पांव पड़ू, तेरी विनती करूं! हे मां-पिताजी! हे मां, हे पिताजी! क्यों? सुन लो, कान लगाकर सुन लो.

बड़ी डाल न उस घर की ज्वाला, जिसमें जलना खेल नहीं है। /दिन भर खोपसन सह, खट-खाकर भी तो मिलता चैन नहीं है।। /नहीं किसी से मेल-मुहब्बत, नहीं किसी से बोल-चाल है। /मुंह माहुर कर सभी देखते, बदहाली मचता भूचाल है।। /जन्म दिया अपनी कुटिया में रहने दे खट कर खाऊंगी। /यदि घर से बाहर तू कर दे, संन्यासिनी वन भर माऊंगी। भीख उगाहूंगी या मठिया में योगिन बनकर रह जाऊंगी/आश्रम में वन तपस्विनी तप करती तो मैं भली रहूंगी।

मां न मुझे दग्धा, मैं भी न कभी तुझको दग्धाऊं। /लेकिन उस घर में मइयाजी पांव ढारूं, पांव न ढारू।।

आगे उसकी सासुजी ने और भी कहा 'गांव जवार, हित-मित, गोत्र, जेठ बड़-छोट सभी इसे समझाकर हार मान गये है. किसी की बात यह रखती ही नहीं है. सभी एक तरफ हैं तो दूसरी तरफ यह अकेली अपनी बात रखने में समर्थ हो जाती है. ऐसी तो यह जबर्दस्त हो गयी है. अतः पाहुनजी, आपही इसे समझा-बुझाकर अपने यहां ले जा सकें तो ले जायं, बात बन जायेगी. अब मैं तत्काल और क्या कह सकती हूं?'

एकांत कमरे में रामबाबू ने अपनी पत्नी से साक्षात्कार होने की प्रतीक्षा की. वह आयी और कमरे के दरवाजे के पास भीतर प्रवेश कर सुस्थिर होकर उसने सर्व प्रथम उलाहना के साथ अपने पति को सर्व प्रथम स्वागत किया-'छिः छिः

आपको लाज नहीं आयी कि एक युग के पश्चात अपना मुंह दिखाने यहां तक चले आये?

नहीं, आप अब मेरा पिण्ड छोड़ दे. मुझे यहीं, अपने मायके में ही रहने दें. मैं अपने समय को यहीं रहकर गुजार लूंगी.

राम बाबू ने कहा–'ऐसा किसी युग में नहीं हुआ है कि अपने पति के रहते विवाहिता अपने मायके में रहकर अलग अपना समय गुजारे. बेटी अपने पिता के घर में पाहुन के समान एक दिन का 'पहुना' दो दिन का 'ठेहुना' (बोझ, भार) और उससे अधिक 'के हूना' (कोई नहीं, परायी) हो जाती है. कहा भी गया है-कविता, वनिता और लतिका को सहारे की अनिवार्य आवश्यकता है. कविता को वाह-वाही चाहिये. पाठकों एवं श्रोताओं के द्वारा प्रशंसित और विद्वानों समालोचको के द्वारा चर्चित कविता फूली नहीं समाती, पाठकों के कंठ का हार बन जाती है. सहारे (पति) के बिना वनिता (पत्नी, स्त्री) 'लतिका' (लता) की तरह बिना सहारे (स्तंभ) के भूमि पर लुंठित (लोट जाने पर) विनष्ट हो जाती है, उसमें फूल-बतिया का अभाव हो जाता है. उसकी मर्यादा नहीं रह जाती. पत्नी को अपेक्षा रहती है-मेरा पति प्राण प्यारा कहां है? जाना मुझे वहीं, वह मेरी आंखों का तारा सहारा जहां है. कविता में अपनी वाह-वाही पर झूमती रस बरसाती है. लतिकायें सहारे की तरफ उन्मुख बढ़ती चढ़ती लहलहाती खिलती, फूलती-फलती अपने को सार्थक बनाती है. पति-पत्नी एक दूसरे के बिना उनका जीवन सूना-सूना हो जाता है. वस्तुतः इस धरा धाम पर एक दूसरे की अवहेलना पति-पत्नी के लिये गौरव से कम कष्टदायक नहीं होती.

राम बाबू की पत्नी इनके दिल का टुकड़ा समझदार थी. बात समझ गयी. विदाई की तिथि निर्धारित हुई. विदाई के एक दिन पूर्व ही राम बाबू अपने घर से अपनी ससुराल चले आये. दूसरे दिन से दोनों प्राणी साथ-साथ अपने घर आकर प्रेम पूर्वक रहने लगे.

राम बाबू कलकत्ता से आइसक्रीम फैक्टरी से छुट्टी पर घर आये थे. सौभाग्यवश छुट्टी समाप्त होने के पूर्व ही इन्होंने सुयोग पाकर अपने ही क्षेत्र में एक उच्च्व विद्यालय में शिक्षक के रिक्त पद पर नियुक्त होकर कार्यरत हो गये. फलतः अपनी रोटी-रोजी के लिए पुनः आइसक्रीम फैक्ट्री में कलकत्ता जाने की उन्हें जरूरत ही नहीं रही!

कूड़े का ढेर

जब रामेश्वरी ने अपनी बेटी बुधिया को कूड़े के ढेर से उठाकर कुछ खाते देखा तो चिल्ला उठी, "अपना पेट ही भरती जाएगी कि भाई को भी कुछ खाने को लाएगी।" बड़बड़ाने लगी, "जब भी कुछ अच्छा मिलता है अपने मुंह में डाल लेती है दूसरों का नहीं सोचती।"

जब मां की चीखती आवाज बुधिया के कानों से टकराई तो वह सहम गई। अभी-अभी तो उसने अपने गंदले चीथड़े हुए फ्राक से पोंछकर किसी अमीर बच्चे का फेंका हुआ सेब होठों से लगाया ही था। वह पलटी और भागती हुई मां के पास आकर एक बार फिर अपने चीथड़े हुए फ्रॉक से पोंछकर बिलखते भाई के दांत रहित मुंह में सेब डाल दिया।

मां ने जोर से बुधिया के सिर पर घूंसा मार दिया और गुस्से से बोली, "अपने भाई के बारे में सोचा कर जिसने बड़े होकर तुम्हारा, हमारा सबका ध्यान रखना है और बुढ़ापे का सहारा बनना है।"

उसने सहमी हुई आंखों से मां की तरफ देखा। परन्तु उसे वह सब सोचने की कहां फुर्सत थी। न ही उसे समझ थी कि वह कह सके, "मां कल का किसने देखा है। आज तो मैं तुम सबको पाल रही हूं चाहे कूड़े के ढेर से ही सही। मैं ही इस समय बेटा बनकर तुम लोगों का पेट भर रही हूं।

मुड़ने से पहले उसने अपने भाई की तरफ देखा जो बड़े आराम से उसके दिए हुए सेब को चूस रहा था। बुधिया को बेचैनी थी कूड़े के ढेर तक पहुंचने

-डॉ० सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'
पाकेट–1, फ्लैट नं०2, सेक्टर–14, राधिका अपार्टमेंट, द्वारका, दिल्ली–110078

की क्योंकि आज उसे कूड़े के ढ़ेर पर बहुत सारे मौसमी फल भी नजर आ रहे थे। अब उसे तसल्ली हो चुकी थी कि उसके भाई का पेट दिए हुए सेब से भर जाएगा। कूड़े के ढ़ेर की तरफ लौटते हुए बुधिया ने मां को कहा, "मां तुम छोटे का ध्यान रखो तब तक मैं लल्लन, तुम्हारे लिए और बापू के लिए कुछ अच्छा सा ढूढ़ कर लाती हूं। आज लगता है किसी बड़े घर में शादी हुई है और काफी कुछ अच्छा दिखाई दे रहा है।"

वह फिर मां, बहन, बेटी बनकर कूड़े के ढ़ेर की तरफ लौट आई और रोटी की तलाश में जुट गई।

-डॉ० पी०आर० वासुदेवन 'शेष'

जी-4, अक्षया फ्लैट्स, 53, ईरुसप्पा स्ट्रीट, आईस हाउस, त्रिप्लिकेन, चेन्नई-600005,

भूख

'कर दिया बस! खाए जा रहा था, खाए जा रहा था. घर पर चार दिन बाद चूल्हा जला था. वह जंगल से लकड़ी लेकर आया था. पैर लड़खड़ा रहे थे, पेट में आग सी जल रही थी.

एक नामी पत्रकार जेल में हत्या के अपराधी किशोर बालक से साक्षात्कार ले रही थी.

'कलुआ! तुम तो इने छोटे और मासूम हो. क्या तुमने ही सचमुच किसी का खून किया है?

कलुआ ने बिना डरे निसंकोच कहा-'हाँ साहिबा! मैंने ही अपने बाप का खून किया है.'

पत्रकार ने उससे पूछा-'बताओ क्यों किया तुमने ऐसा अपराध.'

माँ से रोटी मांगी पर बाप बीच में ही लपक लेता, वह चूल्हे के पास बैठा था. ताडी की हाँडी भी उसने पास ही रखी थी. मैंने हांडी उठा मुंह से लगाई. पेट की आग सिर में चढ़ गई.

रोटी खाने के लिए हाथ बढ़ाया तो बाप ने जोर से धक्का दे दिया. मेरी माँ ने भी रोटी का एक भी टुकड़ा नहीं खाया वह भी चार दिन से भूखी थी. उस पर कमाए हुए रुपयों से बाप का शराब उड़ाना बस. मुझे पता नहीं कब मैंने हँसिया हाथ में उठाया और बाप की मुंडी पर वार कर दिया.'

कलुआ ने पत्रकार को विस्तार से बता दिया. पत्रकार ने कुछ झिझकते हुए कहा-'तुम्हें पता है अब तुम्हें फॉसी लगा दी जाएगी.'

'हाँ, मेमसाब! जब लगेंगी तब लगेगी, रोटी तो मिलती है ना यहॉं! रोज-रोज भूख से मरना तो नहीं पड़ता. हाँ मेम साहिबा! पता है आपको भूख क्या होती है?

इंतजार

मीना रातभर सुहाग की सेज पर पति का इंतजार करती रही परंतु महेंद्र प्रताप नहीं आए. पहली पत्नी की मृत्यु के बाद तो जैसे घर से उनका वैराग्य हो गया था. अपनी दीदी दीपा के कहने पर उन्होंने मीना से शादी तो कर ली पर उसे कभी पत्नी का दर्जा नहीं दिया. दिन गुजरते रहे. मीना को अपने पति की बेरूखी अच्छी नहीं लगती थी. मीना पढ़ी-लिखी और कुशाग्र बुद्धि की थी. दीपा दीदी के कहने पर वह बिजनेस में हाथ बँटाने लगी. पहली पत्नी की मृत्यु के बाद महेंद्र प्रताप का मन बिजनेस से हट सा गया था. कंपनी भी लगातार घाटे में जा रही थी. पर मीना के आने से कंपनी की माली हालत सुधरने लगी. एक दिन महेंद्र प्रताप बहुत बीमार पड़ गए. उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया. मीना ने उनकी बहुत सेवा की पर उनकी हालत नहीं सुधरी. डॉक्टर ने बताया है कि महेंद्र प्रताप की दोनों किडनी खराब

-आशा रौतेला मेहरा

आर.-जेड़.-एच-621, राजनगर पार्ट-2, गली न.-16 पालम नई दिल्ली-110077

हो गई हैं. मीना ने पत्नी धर्म निभाते हुए अपनी एक किडनी अपने पति को दे दी. धीरे-धीरे महेंद्र प्रताप ठीक होने लगे. एक दिन दीपा दीदी ने उन्हें बताया कि मीना ने अपनी किडनी देकर उनकी जान बचाई है तो उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े. आज महेंद्र प्रताप को अपनी गलती का एहसास हो चुका था. मीना के त्याग, समर्पण तथा प्यार-स्नेह ने एक बार उन्हें फिर प्यार करने पर मजबूर कर दिया. हाँ उन्हें मीना से प्यार हो गया था. अपने प्यार का इजहार करना चाहते थे पर उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी. वे मीना के कमरे में गए और मीना का हाथ पकड़कर बोले, आई लव यू मीना. उनके मुँह से ये शब्द सुनकर मीना रो पड़ी और बोली, आपने ये बात कहने में आठ साल लगा दिए. महेंद्र प्रताप ने उसे गले से लगा लिया. वह फूट-फूटकर रोने लगी. सारे गिले-शिकवे आँसू में बह गए.

खाएगें तो, किन्तु खाने नहीं देंगे

-सपना मिश्रा
आनापुर नरायनगंज, कोथरा खुर्द, लम्भुआ, सुल्तानपुर-२२२३०३

सूबे में नई सरकार आने की खुशी सभी वर्गो में व्याप्त थी क्योंकि इस नई सरकार की पार्टी का लोक लुभावन एजेण्डा “न खाएंगे और न खाने देगें” लोगों में गहरी उम्मीद जगा चुका था. सबसे अधिक खुशी जिस वर्ग में थी, वह था किसान वर्ग। इस वर्ग की खुशी का अन्य कारण कर्ज़ माफी, गोवध तथा गोवंश वध पर रोक भी था। परन्तु किसानों को अभी बैंक बहराम से फुर्सत भी नहीं मिली थी कि उन्हें एक गहरा आघात लगा जिसने सभी आगामी उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

दिसम्बर के महीने में जहाँ सभी किसानों के खेतों के चारों तरफ गेहूं, मटर, चना, सरसों, मसूर, अरहर के हरियाली की मखमली चादर फैली रहती थी वहीं इस बार अभी तक सफेद मिट्टी दिख रही है।

ऐसे ही सिरसा गॉव के कुछ किसान कर्जमाफी न करा पाने के क्षोभ से बैंक से घर वापस आ रहे थे कि उन्हें अपने खेतों में दर्जभर बलिष्ट आकर्षक किशोरवय वृषभों का झुण्ड दिखाई दिया। कुछ कोमल मुलायम गेहूं, मटर की कोपलों का आनन्द ले रहे थे, कुछ मादकता भरी मस्तानी चाल से नवांकुरित कोपलों पर विचरण कर रहे थे और कुछ आपस में केलि कर रहे थे। सब बिना भेदभाव के अपनी आजादी का आनन्द मना रहे थे। परन्तु ये क्या? इन्हें देखते ही सभी किसान अवाक् रह गये। शायद अब उन्हें “न खाएँगे और न खाने देंगे।” का असली अर्थ समझ में आ चुका है कि “खाएँगे तो किन्तु खाने नहीं देंगे।”

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1—20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

2—20 **से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदना के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

3—40 **वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम १०० पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम १०० पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित)

4-सभी आयु वर्ग के लिएः हिन्दी सेवियों के लिएः विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2015 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विस्तृत जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करेंः

अंतिम तिथिः 30 अक्टूबर 2018

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-९३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-२११०११, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com, 9335155949

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011, मो0ः 9335155949—

एक प्रति—15/रुपये, वार्षिक—150/रुपये, पंचवर्षीय—700/रुपये, आजीवन—2100/रुपये

समीक्षा

एक दुर्लभ एवं उपयोगी संग्रहः 'हिन्दी परिचायिका'

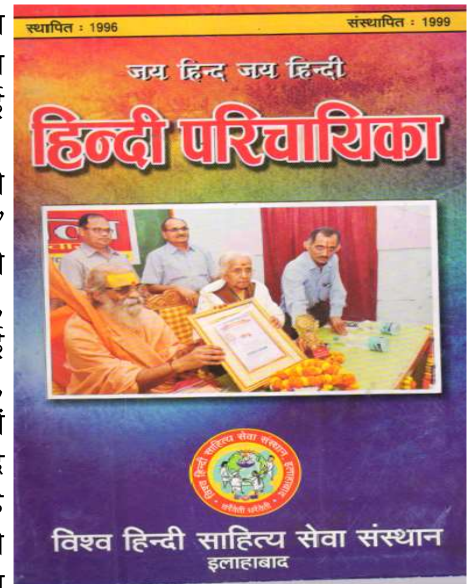

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विगत 21 वर्षो से निरन्तर प्रयत्नशील विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान अनवरत सफलता के नये आयाम गढ़ता हुआ नित नये मुकाम को हासिल कर रहा है. नव प्रयोग, नव प्रयास, नई मिसाल इसके साथ जुड़ते ही जा रहे हैं.

इसी कड़ी में एक नया मुकाम तब जुड़ गया जब संस्थान ने देश विदेश की हिन्दी सेवी संस्थानों की सूची अपने 21वर्ष पूर्ण करने पर 'हिन्दी परिचायिका' के नाम से विमोचित करवाया. 100 पृष्ठीय इस परिचायिका में हिन्दी सेवी संस्थाओं, उनके प्रमुख पदाधिकारियों के नाम, पते, मोबाइल नंबर, ईमेल, वेबसाईट आदि के साथ, केन्द्र सरकार के सभी मंत्रियों के संपर्क नंबर, ई मेल, सभी राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों के नाम, मोबाइल नंबर, ईमेल, जनोपयोगी केन्द्रीय विभागों के नाम, पते, ई-मेल, मुख्य अधिकारियों के नाम, व संपर्क, उत्तर प्रदेश के जनपयोगी विभागों के नाम, पते, आदि समाहित कर एक दुर्लभ ग्रंथ तैयार किया. मशक्कत भरे इस कार्य को बड़े ही सरलता व सहजता से पिरोया गया है. इन सबके बाद विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान का परिचय, उद्देश्य, सदस्यता आवेदन प्रपत्र, प्रगति आख्या, संस्थान के दिवंगत पदाधिकारी, विहिसा सरताज, संस्थान के संस्थापक सदस्यों की सूची/पदाधिकारियों की सूची, संस्थान के पूर्व पदाधिकारियों की सूची, वर्तमान पदाधिकारियों के फोटो युक्त नाम, पते व संपर्क, हिन्दी सांसदो के नाम, पते व संपर्क, संरक्षक सदस्य, आजीवन सदस्यों, स्थायी सदस्यों के नाम, पते व संपर्क, साधारण सदस्यों के नाम व संपर्क, संस्थान द्वारा अब तक विभिन्न सम्मानों से सम्मानित साहित्यकारों, हिन्दी सेवियों, पत्रकारों एवं समाज सेवियों की सूची, संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की नाम, लेखक/संपादक के नाम, मूल्य की सूची, सम्मानार्थ प्रविष्टियों के साथ ही साथ विभिन्न आयोजन के कुछ मुख्य चित्र माला, से सुसज्जित इस पुस्तक में चांर चांद लगाने को काफी है. इसकी उपयोगिता कितनी सार्थक है कि 24 जून 2018 का 16वें साहित्य मेला के अवसर पर मंचासिन अतिथियों ने इसे अपने आप में एक दुर्लभ ग्रन्थ कहा गया.

यह एक ऐसी पुस्तक में जिसमें किसी हिन्दी प्रेमी व्यक्ति को एक साथ देश-विदेश की तमाम हिन्दी सेवी संस्थाओं की सूची प्राप्त हो सकती है.

पुस्तक का नामः हिन्दी परिचायिका
मूल्यः रुपये 150/ एक सौ पचास रुपये मात्र

संपर्कः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011
संपर्कः 9335155949, 9264964112

पुस्तक मूल्य बैंक ड्राफ्ट/धनादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

विशेषः 01 पंजीकृत डाक से प्राप्त करने के लिए डाक खर्च अलग से जमा करना होगा।
02 10 प्रतियों की मांग पर पंजीकृत डाक खर्च नहीं लिया जाएगा।
03 हिन्दी सेवी संस्थाओं को 50प्रतिशत की छूट पर प्रदान की जाएगी।